INCOME TAX DEPARTMENT

ஜரோகா झरोखा
JHAROKHA

இதழ் | अंक | ISSUE - 17

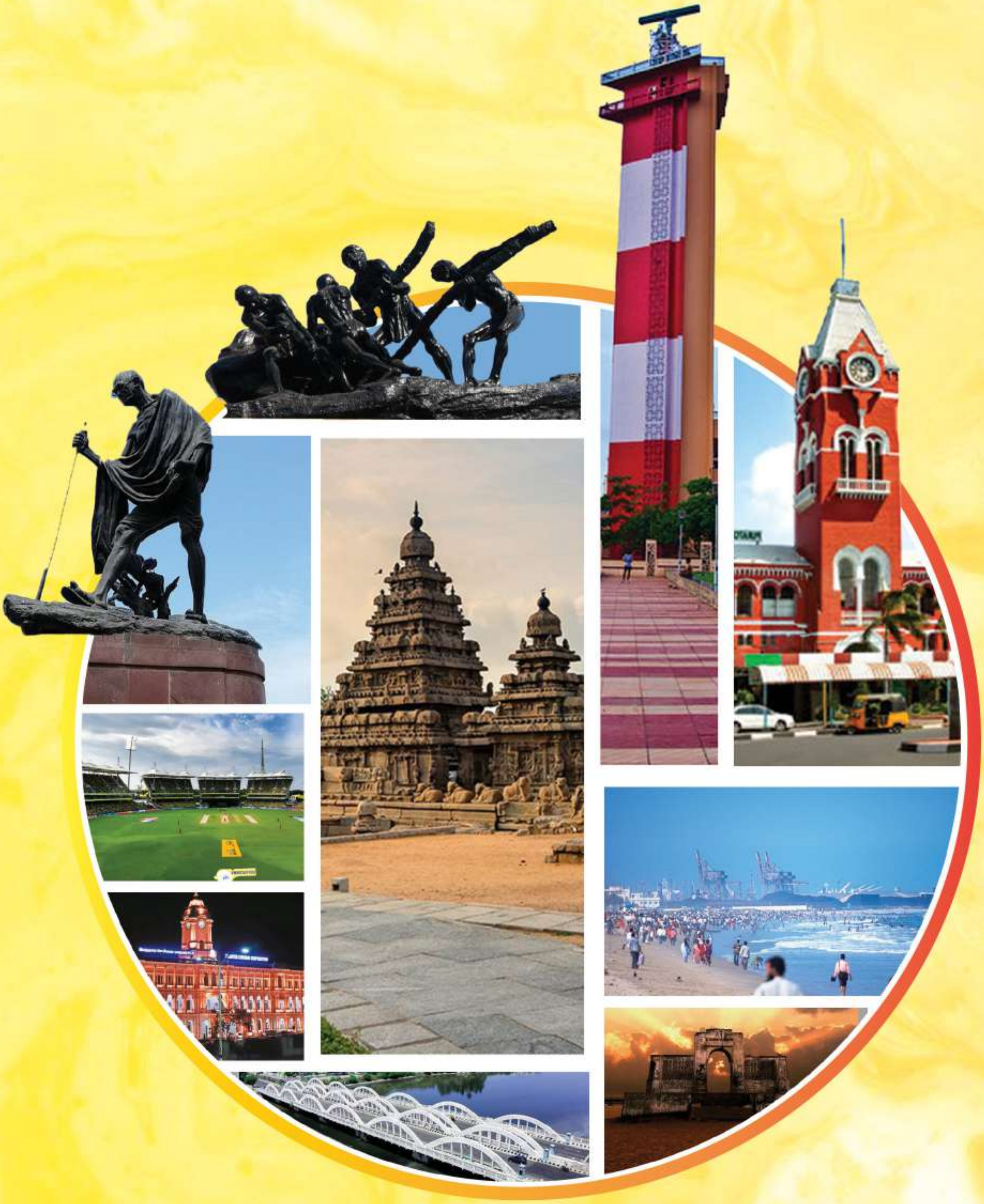

आयकर विभाग चेन्नै की त्रिभाषी गृह पत्रिका

त्रिभाषी पत्रिका झरोखा – 16 वां अंक
Trilingual Magazine JHAROKHA - 16th Issue

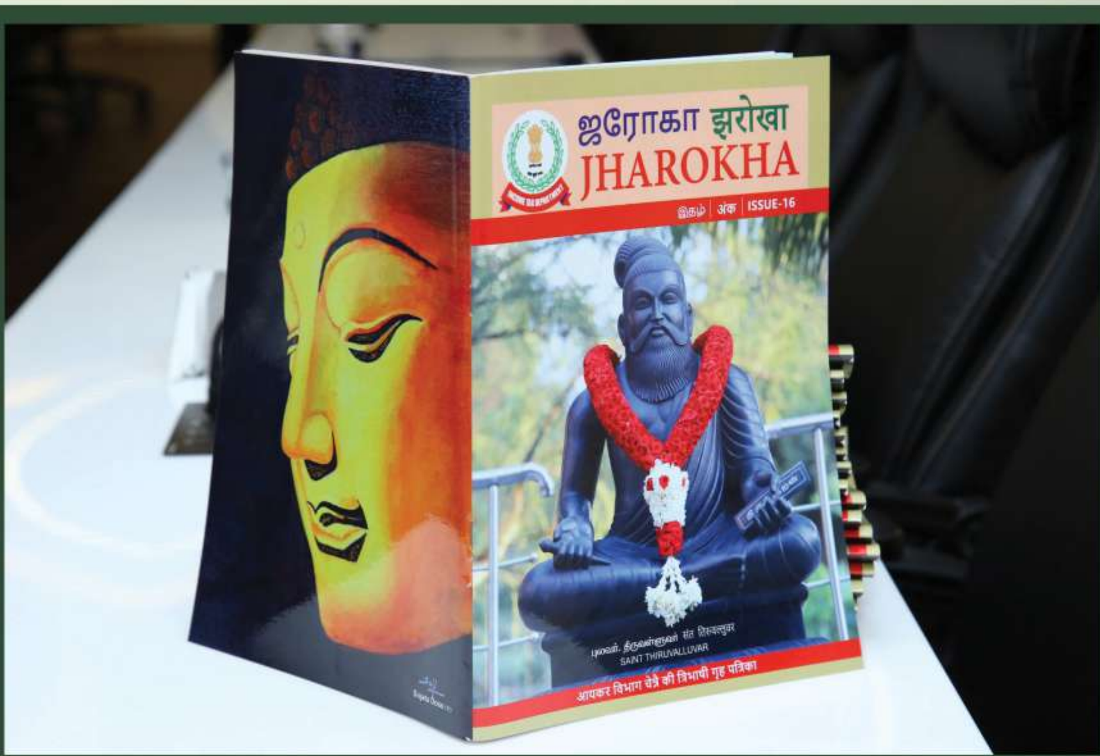

वर्ष 2025

"अंक-17"
ई-अंक-3

आयकर विभाग की त्रिभाषी गृह पत्रिका

संरक्षक : श्री.इ.एस.नागेन्द्र प्रसाद
प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नै

संपादक : श्री एस.सुन्दर राजन
आयकर आयुक्त (प्रशा.एवं करदाता सेवा) एवं राजभाषा अधिकारी,चेन्नै

सम्पादक मण्डल

हिंदी स्कंध
श्रीमती विजयलक्ष्मी नारायणन
उप निदेशक (राजभाषा)
तना एवं पु, चेन्नै

तमिल एवं अंग्रेजी स्कंध
श्रीमती यू.कार्तियायिनी
आयकर अधिकारी
चेन्नै

सहयोग

श्री.सतेन्द्र कुमार सिंह, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री. रीतेश साहनी, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री रमन, आशुलिपिक

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखक के अपने हैं ।
संपादक मण्डल का इनमें सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस प्रकाशन को और रोचक बनाने के लिए विज्ञ पाठकों के सुझाव आमंत्रित हैं ।

Table of **Contents**

हिन्दी — Hindi

संघर्ष की उड़ान 13
अभिनव चौधरी

महिमा बाबा भुजंगी की: चमत्कार या अंधविश्वास? 14
चाहत अरोड़ा

ख़ुश होना एक दिमागी अवस्था है। 16
दिनेश कुमार

मेरा परिवार, मेरी जिम्मेदारी 20
के. गायत्री

यात्रा का व्यक्तित्व पर प्रभाव 22
गोमती सुब्रमणियन

एक जीवन ऐसा भी 24
कपिल कुमार

दहेज प्रथा कविता 26
प्रेरणा

यात्रा यानी तीर्थ तिरुवन्नामलाई- तीर्थस्थल 27
सतेन्द्र कुमार सिंह

वर्तमान में मानव जीवन के समक्ष चुनौतियां 30
प्रिया मिश्रा

भारत में जी.20 और इसका अर्थव्यवस्था पर प्रभाव 35
राहुल कुमार

उड़ान 37
एस. अबिरामी

प्रकृति से विचरित मानवजाति का बोध 38
रोहिताश सारस्वत

शिक्षा और संघर्ष 39
सागर कुमार

अंग्रेज़ी — English

The Moon's Journey 43
Sunil Kumar Chowdhary

Teachers 43
G. Raghav Krishna

To The One Who Spoke The Same Language 44
RAMA LAGUDU

Strings Of Dilemma The Call Of Fate 44
Chandana

Read 45
D.Komali Krishna.I.R.S

The Great Saint Sadasiva Brahmendra 48
K. Hemalata,

Memories of a Trainer : An anecdotal account 54
N.B. Som

My Pilgrim Trip To Puri And Odisha 56
T.M. Hemalatha

Anecdote : Empathetic Sisterhood 60
Rama Lagudu

தமிழ் — Tamil

கனவு மெய்பட வேண்டாம் 61
K. Suresh Babu

இயற்கை 62
B. Revathy, AO

முடிவு அல்ல 63
R. Bhuvaneswari, ITO

பெண்ணின் பெருமையை, மண்ணின் பெருமை 66
M. Vedavalli, AO

உயிரின் வலி 68
V. Senthil Nathan,

சிற்றுண்டி 70
B. Revathy, AO

Events/Artworks

Testimonials 05
Independence Day 2025 11
Rashtriya Karmyogi Master Training Program 12
Debate on Social Media 12
Paintings 18
Paintings 32
Inauguration of 'Annam' Canteen 33
Inauguration of Vivekananda Arangam 34
Hindi Competitions organised on the occasion of Hindi Day. 41
Hindi Elocution competition organised by TOLIC 42
Inauguration of Poonkudil Guest House at Anna Nagar 46
Inauguration of Tendral Cafeteria 47
166th Income Tax Day Celebration 51
Our Champions 52
Paintings 53
ITSRC Cultural Meet Inauguration 58
Pongal Celebration 59
Paintings 72

भारत सरकार/ GOVERNMENT OF INDIA
आयकर विभाग/ INCOME TAX DEPARTMENT
प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त
Principal Chief Commissioner of Income Tax
तमिलनाडु एंव पुदुचेरी Tamilnadu & Puducherry,
चेन्नै Chennai.

इ. एस. नागेन्द्र प्रसाद, भा.रा.से.
E. S. Nagendra Prasad, I.R.S

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय, चेन्नै की त्रिभाषी गृह पत्रिका 'झरोखा' के 17 वें अंक का प्रकाशन ई-पत्रिका के रूप में किया जा रहा है। भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है व विविधता में एकता हमारे देश की विशेषता रही है। इसी एकता की भावना को 'झरोखा' पत्रिका में तमिल, हिन्दी एवं अंग्रेजी के लेखों द्वारा रचनाकारों ने दर्शाया है।

हिन्दी भारत की राजभाषा है और इसका प्रयोग करना प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी का सांविधिक एवं नैतिक दायित्व है। सरकारी कार्यालयों में 'कंठस्थ 2.0' एवं अन्य टूल्स का प्रयोग कर कार्यान्वयन को सरल और आसान किया जा सकता है। अत: अनुरोध है कि कार्यालय में राजभाषा विभाग के तकनीकी टूल्स का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें।

'झरोखा' पत्रिका के सफल सम्पादन से जुड़े सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को तथा पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों को बधाई देता हूँ। मैं पत्रिका के सफल एवं निरंतर प्रकाशन की कामना करता हूँ।

इ. एस. नागेन्द्र प्रसाद

भारत सरकार/ GOVERNMENT OF INDIA
आयकर विभाग/ INCOME TAX DEPARTMENT
मुख्य आयकर आयुक्त - 1
Chief Commissioner of Income Tax - 1,
चेन्नै Chennai

डॉ. डी. सुधाकर राव, भा.रा.से
Dr. D Sudhakara Rao, I.R.S

शुभकामना संदेश

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त प्रभार, चेन्नै की त्रिभाषी गृह पत्रिका 'झरोखा' के 17 वें 'अंक का ई-अंक' के रूप में प्रकाशित होना आनंद का विषय है।

'झरोखा' पत्रिका सभी अधिकारी और कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक कृतियों को सार्वजनिक मंच प्रदान करने के साथ-साथ कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रचार और प्रसार को बढाने में सहयोगी होगी। मुझे यह विश्वास है कि तमिलनाडु क्षेत्र में भाषा और सांस्कृतिक आदान प्रदान के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाने कि राह प्रशस्त करेगी।

'झरोखा' पत्रिका के संपादक के कार्य से जुड़े अधिकारी और कर्मचारियों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई। आशा है 'झरोखा' अन्य पाठकों को भी अपनी प्रतिभा दिखाने को प्रेरित करेगी।

शुभकामनाओं सहित।

डॉ. डी. सुधाकर राव

भारत सरकार/ GOVERNMENT OF INDIA
आयकर विभाग/ INCOME TAX DEPARTMENT
मुख्य आयकर आयुक्त-3,
Chief Commissioner of Income Tax - 3,
चेन्नै Chennai

सिरिपुरपु पद्मजा, भा.रा.से
Siripurapu Padmaja, I.R.S

शुभकामना संदेश

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त प्रभार, चेन्नै की त्रिभाषी गृह पत्रिका 'झरोखा' 17 वें अंक का प्रकाशन होना हर्ष का विषय है और एक सराहनीय प्रयास है।

'झरोखा' पत्रिका कार्यालय में कार्यरत अधिकारी और कर्मचारियों को अपनी रचना और कला को दिखाने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करेगी। 'झरोखा' पत्रिका की संपादक टीम, रचनाकार और इससे जुड़े सभी अधिकारी और कर्मचारियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित,

Siripurapu Padmaja
सिरिपुरपु पद्मजा

भारत सरकार/ GOVERNMENT OF INDIA
आयकर विभाग/ INCOME TAX DEPARTMENT
आयकर महानिदेशक (अन्वे.),
Director General of Income Tax, (Investigation)
तना एवं पु, TN & P,
चेन्नै Chennai

प्रताप सिंह, भा.रा.से.
Pratap Singh, I.R.S

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त प्रभार, चेन्नै की त्रिभाषी गृह पत्रिका 'झरोखा' के 17 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नै क्षेत्र में त्रिभाषी पत्रिका का सफल प्रकाशन होना राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम को और बढ़ाएगा। 'झरोखा' पत्रिका रचनाकारों की रचनात्मकता को सामने लाने और कार्यालयीन कार्य में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने का कार्य भी करेगी। पत्रिका सभी अधिकारी और कर्मचारियों को हिंदी लेखन को बढ़ावा देने का एक सशक्त माध्यम भी है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल और इससे जुड़े प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी को हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं सहित।

प्रताप सिंह

भारत सरकार/ GOVERNMENT OF INDIA
आयकर विभाग/ INCOME TAX DEPARTMENT
मुख्य आयकर आयुक्त (टी.डी.एस)
Chief Commissioner of Income Tax (TDS)
चेन्नै Chennai.

डॉ. एस. शाकिर हुसैन, भा.रा.से
Dr. S. Shakir Hussain, I.R.S

शुभकामना संदेश

यह गौरव का विषय है कि प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त प्रभार, चेन्नै की त्रिभाषी गृह पत्रिका 'झरोखा' 17 वें अंक का प्रकाशन 'ई पत्रिका' के रूप में भी किया जा रहा है।

प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भाव के माध्यम से राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन करने में 'झरोखा' एक मुख्य भूमिका निभा सकती है। आज के डिजिटल समय में ई-टूल्स के माध्यम से कार्यालय का अधिकतम कार्य कंप्यूटर पर हिंदी में सहजता से किया जा रहा है और इस तरह के नवाचार हिंदी को स्थापित कर रहे हैं।

'झरोखा' पत्रिका में सहयोग देने वाले प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी को हार्दिक बधाई और आशा है कि 'झरोखा' को सुधी पाठकों का स्नेह प्राप्त होगा।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. एस. शाकिर हुसैन

भारत सरकार/ GOVERNMENT OF INDIA
आयकर विभाग/ INCOME TAX DEPARTMENT
आयकर आयुक्त (प्रशा. एवं क.दा.से.),
Commissioner of Income Tax (Admin & TPS),
चेन्नै Chennai

एस. सुन्दर राजन, भा.रा.से
S. Sundar Rajan, I.R.S

सम्पादकीय

आप सबको बताते हुए यह हर्ष का विषय है कि 'झरोखा' सत्रहवें वर्ष में प्रवेश कर रही है। गृह पत्रिका का मुख्य उद्देश्य अपने यहाँ होने वाली गतिविधियों से परिचय कराने के साथ - साथ छिपी प्रतिभाओं को उजागर करने का अवसर प्रदान करना होता है। इस दृष्टि से गृह पत्रिका 'झरोखा' अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाती आ रही है।

हिंदी एक जीवंत और गतिशील भाषा है, हिंदी की सरलता, सहजता और समावेशिता ने इसके व्यापक उपयोग को बढ़ावा दिया है। इसका प्रयोग शिक्षा, शोध, व्यापार एवं रोजगार समेत विभिन्न क्षेत्रों में हो रहा है।

हम सब जानते हैं कि भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था। हम सब का कर्तव्य है कि केंद्र सरकार की राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम् भूमिका निभाते हुए अपने दैनंदिन कार्यों में इसको स्थान दें। राजभाषा विभाग के ई-टूल्स का प्रयोग करें और सकारात्मक वातावरण बनाते हुए अपने सहकर्मियों को प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।

मुझे विश्वास है कि गृह पत्रिका 'झरोखा' की रचनाएँ पाठकों को ज्ञानवर्धक एवं रोचक लगेंगी। मैं पूरे सम्पादकीय समूह और राजभाषा अनुभाग के सदस्यों को बधाई देता हूँ। आप सभी से अनुरोध है कि अपने विचार अवश्य ही लिख कर दीजिए।

एस. सुन्दर राजन

स्वतंत्रता दिवस 2025
Independence Day 2025

राष्ट्रीय कर्मयोगी मास्टर प्रशिक्षण कार्यक्रम
Rashtriya Karmyogi Master Training Program

सोशल मीडिया पर परिचर्चा
Debate on Social Media

संघर्ष की उड़ान

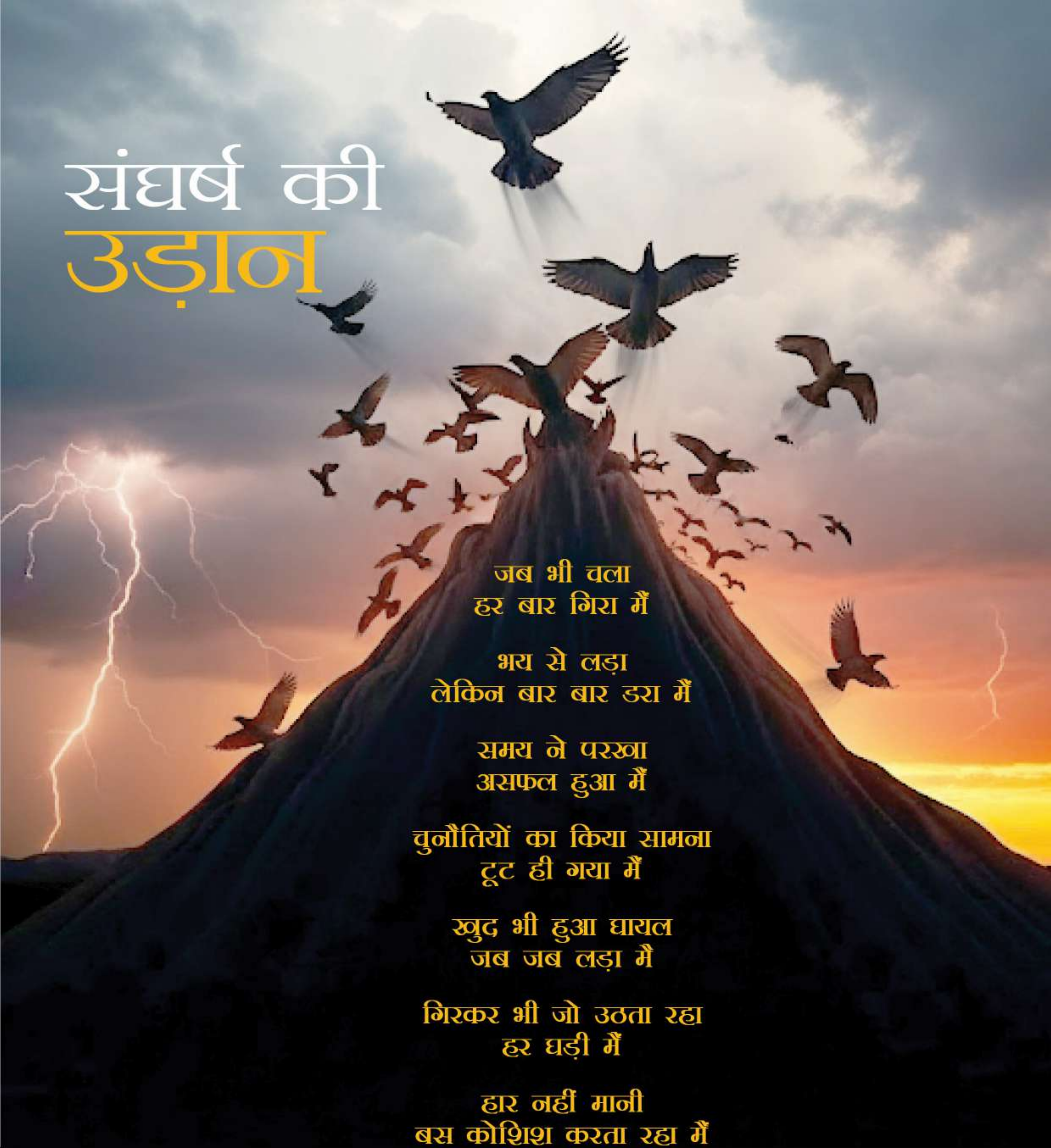

जब भी चला
हर बार गिरा मैं

भय से लड़ा
लेकिन बार बार डरा मैं

समय ने परखा
असफल हुआ मैं

चुनौतियों का किया सामना
टूट ही गया मैं

खुद भी हुआ घायल
जब जब लड़ा मै

गिरकर भी जो उठता रहा
हर घड़ी मैं

हार नहीं मानी
बस कोशिश करता रहा मैं

संघर्ष की यही साधना
जमीन से उठा,
और आकाश को छुआ मैं

अभिनव चौधरी
आयकर निरीक्षक

महिमा बाबा भुजंगी की: चमत्कार या अंधविश्वास?

एक गाँव में एक दिहाड़ी मजदूर भूषण अपनी पत्नी गीता के साथ रहता है। उनकी शादी को सात साल हो चुके हैं लेकिन अभी तक भी उनकी कोई संतान नहीं है। कई वैद्य और हकीमों के पास जाने के बावजूद उन्हें सफलता नहीं मिली और यही गीता के लिए चिंता का कारण था। गीता इसी सोच में हमेशा रहती है कि कब उसे संतान की प्राप्ति होगी। वहीं दूसरी ओर भूषण हमेशा उसे दिलासा देता रहता है कि निराश होने से कुछ भी नहीं होगा और एक दिन जरुर कोई ना कोई रास्ता निकल आएगा। परंतु फिर भी गीता हमेशा इसी बात को लेकर उदास रहती है और इसी वजह से दोनों के रिश्तों में खटपट और टकराहट रहती है।

एक दिन, ज्यादा काम करने की वजह से भूषण को, उसके मालिक की ओर से तीन सौ रुपये अधिक मिलते हैं। भूषण निर्णय करता है कि वो उन पैसों से अपनी पत्नी गीता के लिए एक नई साड़ी खरीद कर ले जाएगा। जब भूषण साड़ी खरीद कर घर जाता है तो वह पाता है कि गीता संतान न होने के कारण दुखी है। वह गीता को साड़ी दिखाता है लेकिन गीता कोई प्रतिक्रिया नहीं देती। इसी बीच उनकी पड़ोसी लक्ष्मी उनके घर आती है और देखती है कि गीता तनाव-ग्रस्त है। पूछे जाने पर, गीता ने संतान न होने की अपनी समस्या लक्ष्मी से साझा की, जिस पर लक्ष्मी ने उन्हें भुजंगी बाबा के पास जाने का सुझाव दिया। लक्ष्मी ने यह भी बताया कि भुजंगी बाबा 2 दिनों में पास के शहर में एक दरबार आयोजित करने वाले हैं।

दरअसल भुजंगी बाबा, अपने आप को बड़ा चमत्कारी, अंतर्यामी और शक्तिशाली बाबा बताता है और दावा करता है कि उसके पास लोगों की सभी समस्याओं का समाधान है। बाबा जगह-जगह जाकर अपना दरबार लगाता है। बाबा के दावों से प्रभावित होकर बाबा के अनेक भक्त बन गए जो बाबा के दरबार में आते थे और अपनी समस्याओं का समाधान पूछते थे। बाबा भी कुछ अतरंगी-सा समाधान बता कर, भक्तों को फसां लिया करता था।

भूषण और गीता भी शहर में बाबा के दरबार में जाते हैं और बाबा से उनकी समस्या का समाधान पूछते हैं। बाबा उनसे संतान प्राप्ति के लिए देवी माँ की एक विशेष पूजा-अर्चना कराने के लिए कहता है और उस पूजा-अर्चना के लिए बाबा उनसे कुछ हवन सामग्री और सारे धन और जेवर की मांग करता है।

अगले दिन गीता और भूषण अपना सारा धन, जेवर और हवन के लिए सामग्री लेकर बाबा के पास पहुँचते हैं। बाबा पूजा अर्चना आरंभ करता है और अंत में देवी मां की विशेष भभूत गीता और भूषण को देता है और रोज रात को भभूत को लेने का निर्देश देता है। जैसी ही गीता और भूषण, बाबा को धन्यवाद करके निकल रहे होते हैं, बाबा उन्हें रोक लेता है और कहता है कि अभी एक और कार्य शेष है जिसके बिना गीता को संतान प्राप्ति का सुख नहीं मिल सकता। बाबा कहता है की उनको देवी मां से संतान प्राप्ति का आशीर्वाद पाने के लिए एक बच्चे कि बलि देनी होगी और उन्हें डराता है कि एक घंटे में एक बच्चे को लाना होगा नहीं तो सारी दैवीय शक्तियां निरस्त हो जायेंगी और गीता की

कोख हमेशा के लिए सूनी रह जाएगी। गीता और भूषण बच्चे की बलि देने का विरोध करते हैं और बाबा से संतान प्राप्ति के लिए कोई और उपाय का अनुरोध करते हैं। लेकिन बाबा उन्हें डराता है और धमकाता है और इसीलिए विरोध करने के बावजूद उन्हें जाकर बलि के लिए एक बच्चे की तलाश करनी पड़ती है।

पास ही के एक गाँव में उन्हें एक बच्चा दिखता है और वे जैसे ही उसे उठाने वाले होते हैं, तो उसकी माँ उन्हें ऐसा करते हुए देख लेती है। वह चिल्लाने लगती है और उसके बाद सभी ग्रामीण वहां इकट्ठा हो जाते हैं और भूषण और गीता को पकड़ लेते हैं और उनसे लड़ने लगते हैं। पकड़े जाने पर भूषण और गीता कहते हैं ये सब उन्होनें बाबा भुजंगी के कहने पर किया। जिसके बाद ग्रामीण उन दोनों को समझाते हैं कि ये सब अंधविश्वास है। अपनी गलतियों का एहसास होने के बाद, भूषण और गीता बच्चे की मां और अन्य ग्रामीणों से माफी मांगते हैं। सभी ग्रामीण भुजंगी बाबा को सबक सिखाने और उसे पुलिस को सौंपने का फैसला करते हैं।

वे सभी बाबा के दरबार में पहुंचते हैं और बाबा से कई सवाल-जवाब करते हैं। ग्रामीण उस बाबा से गायत्री मंत्र सुनाने को कहते हैं लेकिन बाबा सुनाने में असमर्थ होता है। बाबा, ग्रामीण द्वार पूछे गए किसी भी सवाल का सही से जवाब नहीं दे पाता और गांव वालों से माफी मांगने लगता है। इसके बाद, बाबा को पुलिस को सौंप दिया जाता है और उन्ही ग्रामीणों में से एक, भूषण और गीता को उसके एक डॉक्टर मित्र से मिलने का सुझाव देता है। भूषण और गीता अंधविश्वास का मार्ग छोड़ कर ग्रामीणों द्वारा दिखाये मार्ग पर चल पड़ते हैं एवं शहर में जाकर एक डॉक्टर से संपर्क करते हैं। कुछ समय पश्चात गीता एक नन्ही बेटी को जन्म देती है।

हमें भी इसी तरह समाज में फैले हर अंधविश्वास को उखाड़ फेंकना है, इसी में ही समाज एवं राष्ट्र का हित है। हमें लोगों को अंधविश्वास से विश्वास की ओर लेकर जाना है, तभी हम एक समृद्ध समाज का सपना पूरा कर पाएंगे।

– **चाहत अरोड़ा**

आयकर निरीक्षक

राजभाषा हेतु निर्धारित लक्ष्य – 'ग' क्षेत्र

पत्राचार –
60%

टिप्पण –
35%

खुश होना एक दिमागी अवस्था है।

अक्सर किसी से भी बात करें तो जरूर हमें सुनने को मिल ही जाता है कि जिंदगी में कुछ अच्छा नहीं चल रहा, या बहुत परेशानियां हैं, या सुकून नाम की चीज नहीं है, न जाने क्या क्या? ज्यादातर लोगों को हमने सुना देखा, समझा तो लोग ये कहते मिलते हैं कि हमारे जीवन में ये हो जाए तो सुकून या खुशी आ जायेगी, परंतु ऐसा होता नहीं हैं उसकी इच्छा पूरी होने पर वो और चीजों, इच्छाओं, जरुरतों को लेकर परेशान हो जाता है। जबकि जीवन में बहुत सारे खुशी के मोमेंट (पल) आने पर भी, ज्यादा की चाह में निराश हताश बना रहता है, इच्छाएं अनंत होती हैं, सिर्फ जरूरतें पूरी हो सकती हैं। लेकिन बहुत सारे लोगों से मिलने का अवसर आया तो पता चला बिना किसी कारण के वो दुखी, उदास, निराश हैं जिसका कारण ही नहीं पता होता। किसी को खुश देखकर न जाने कितने दुखी होते हमने देखे हैं।

जब हम बात कर रहे हैं खुश रहने का मूलमंत्र तो बताते हैं कि पहले तो हमें यहे मालूम होना चाहिए कि कर्ता हम नहीं हैं, कोई और है, हम कारक हैं। इसको इस तरह से समझें कि हमें एक फिल्म में किरदार मिला है, निर्देशक जो आदेश करता है उसके इशारे पर सभी किरदार निभाते हैं। कट बोलते ही किरदार से सभी बाहर आ जाते हैं। तो हमें यहे मानव जीवन मिला है ईश्वर कर्ता है वो हमको इशारे देकर हमारे द्वारा हर काम करवा रहा होता है, हमें लगता है हमीं सब कर रहे होते हैं पर असलियत या हकीकत कुछ और होती है। जो हमारे हित में होता है ईश्वर हमें वो ही देता है। हमें कर्ता भाव से मुक्त होकर, कारक भाव से अपने शरीर रूपी इस किराये के मकान में रहते, किरदार निभाना है।

परमात्मा का कट का इशारा पाते ही शरीर से प्राण निकल जाते है, जिंदगी की फिल्म खत्म हो जाती है। तो जो बहुमूल्य जीवन मिला है उसका सदुपयोग करते लोगों से खुशियां बांटते, हंसते, हंसाते, जिम्मेदारियां निभाते चले जाना है। जो हमारे द्वारा काम करवाने हैं, वो करवा ही लेगा,

परमात्मा के आगे किसी की नहीं चलती। सच्चाई जिसको मालूम होती है वो हर पल, हर घड़ी, मस्ती में जीता, खुशियां बांटता, जीवन जी लेता है, इसके उलट जिसको सच्चाई नहीं मालूम वह हताश-निराश, उदास, नकारात्मकता के बीच दुखी जीवन काटता, गिले शिकवे में पड़े-पड़े एक दिन जीवन की अंतिम यात्रा कर जाता है। जिन्हें परमात्मा अर्थात ईश्वर पर भरोसा है वो निराश हो ही नहीं सकते। उनको पता है जीवन की डोर खुदा के हाथ है, जैसा वो चाहे चला रहा है उससे बेहतर हम नहीं जानते, इसलिए उसकी रजा में समर्पण भाव से ईश्वर का शुक्रिया करते कर्म करते जाना है। सब कुछ जब होना है, तभी होगा, तो हम परेशान क्यूं हों। ये भाव आते ही इंसान को जीवन जीना आ जाता है, खुश रहता है, मुस्कुराते मिलेगा, सकारात्मकता के साथ मिलेगा। जिससे मिलता है या उसके आस पास का वातावरण इक अलग सा होता है।

हमने भी कई बार कितनों को न जाने किस- किस बात से परेशान होते रोते देखा है। वो हमसे भी पूंछते हैं कि तुम परेशान नहीं हो, तुमको चिंता नहीं होती, न जाने क्या-२ कई बार मुझसे मित्र हताश निराश पूंछते हैं कि तुम खुश कैसे हो, तुम्हारी परिवार, साथ नहीं है, स्थानांतरण नहीं हो रहा वगैरह, मैं जानता हूं जिसमें मेरा हित होगा ईश्वर वही कर रहा है तो चिंता किस बात की। इतना सुंदर घर परिवार, नौकरी, स्वस्थ माता-पिता, सब कुछ अच्छा चल रहा है, मुझे मालूम है मैं कर्ता नहीं कारक हूं, इसलिए खुश हूं, क्योंकि उसके इशारे के बिना पत्ता तक नहीं हिलता तो उसकी रजा में खुश रहने का मजा ही कुछ और है। खुश रहना मतलब यह एक मानसिक अवस्था है जब इंसान का विश्वास ईश्वर पर पूर्ण होता है तो वह सकारात्मक रहता है, खुश रहता है, हंसते-मुस्कुराते, आस-पास के वातावरण को सकारात्मक कर देता है। मेरी खुशी का राज यही है। यह इक मानसिक अवस्था, चेतना जिसको पा लेने भर से इंसान सकारात्मक हो जाता है।

– **दिनेश कुमार,**
वरिष्ठ निजी सचिव

राजभाषा हेतु निर्धारित लक्ष्य

हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में – 100%

वेबसाइट – द्विभाषी

(By: S. Harshika d/o M. Senthil, ITI)

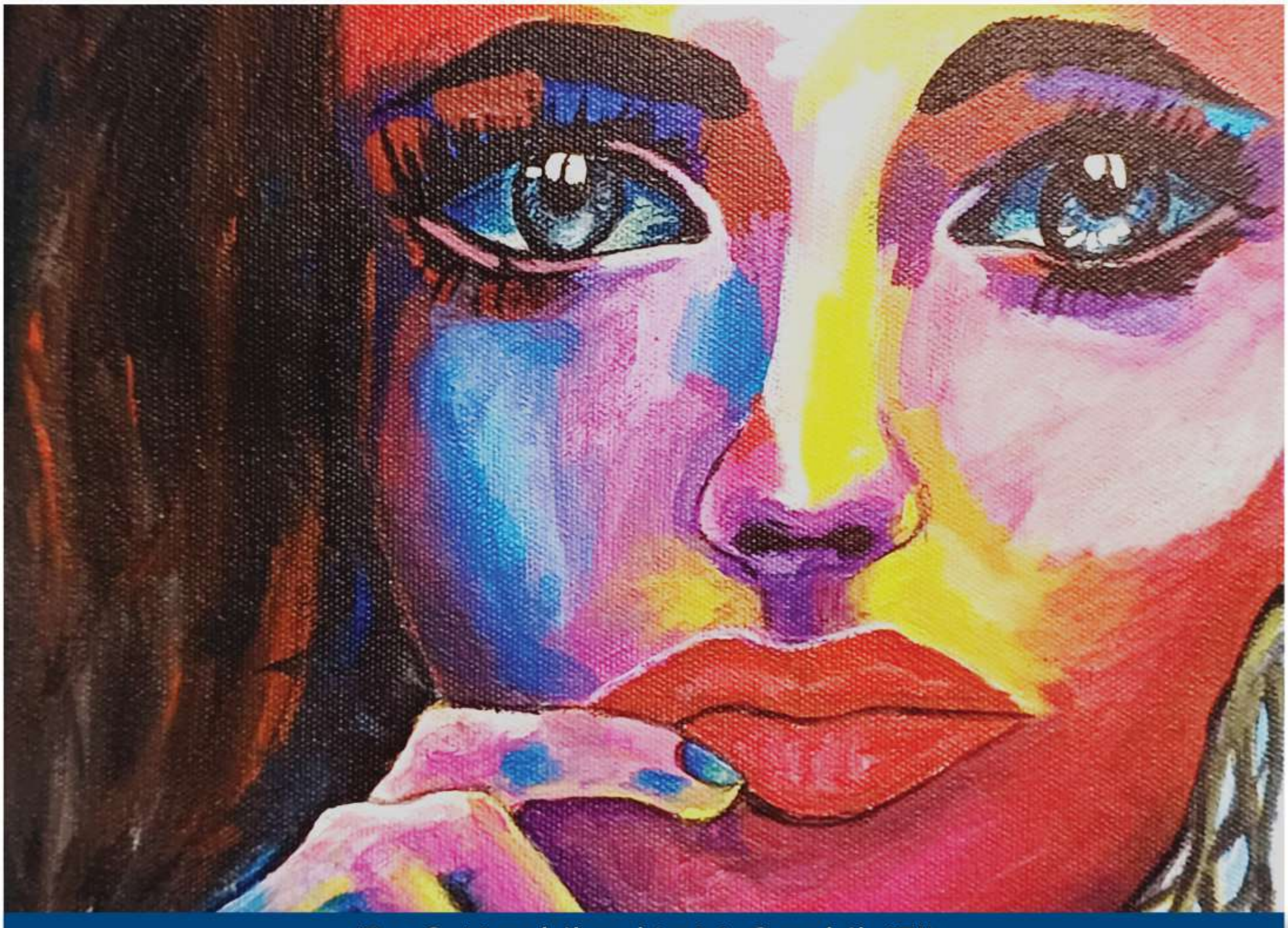

(By: S. Harshika d/o M. Senthil, ITI)

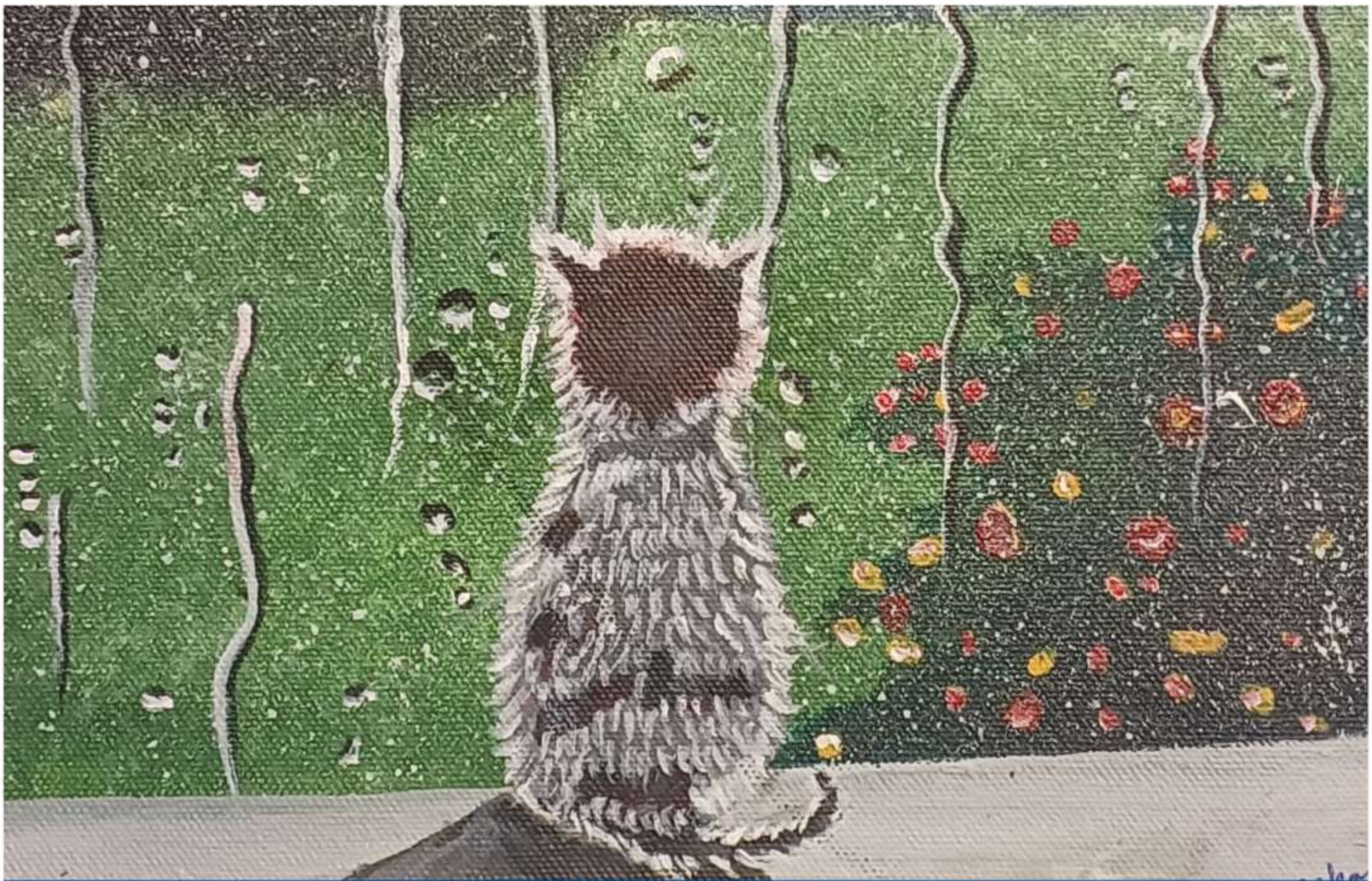

(By: S. Harshika d/o M. Senthil, ITI)

(By: S. Harshika d/o M. Senthil, ITI)

मेरा परिवार, मेरी जिम्मेदारी

मनुष्य का उत्तरदायित्व अपने परिवार का नेतृत्व करना है। - एजरा टैफ्ट बेन्सन

परिचयः

कहावत "मेरा परिवार, मेरी जिम्मेदारी" के गहरे बंधन को व्यक्त करती है। आइए जानें कि पारिवारिक जिम्मेदारियाँ किसी व्यक्ति को व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में कैसे योगदान करती हैं, और पारस्परिकता एक सामंजस्यपूर्ण पारिवारिक जीवन को कैसे रेखांकित करती है।

पालन–पोषण एवं समर्थनः

व्यक्ति की सामाजिक, भावनात्मक और मानसिक भलाई का पोषण परिवार द्वारा किया जाता है। यहाँ एक परिवार के भीतर एक दूसरे को सहायता प्रदान करने की जिम्मेदारी शुरु होती है। माता-पिता अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं, बदले में बच्चे अपने माता-पिता का पालन-पोषण करके बड़े होंगें।

हर किसी को रहने के लिए घर की जरुरत होती है, लेकिन एक सहायक परिवार ही घर बनाता है। एंथनी लिसिओन

भावनात्मक जिम्मेदारीः

एक सौहार्दपूर्ण पारिवारिक जीवन भावनात्मक खुशहाली में महत्त्वपूर्ण योगदान देना है। खुशी, दुख और तनाव के समय भावनात्मक समर्थन देना परिवार के प्रत्येक सदस्य की जिम्मेदारी है।

वित्तीय और शैक्षिक जिम्मेदारीः

माता -पिता अपने बच्चों की जरुरतों, शिक्षा, और विकास को पूरा करने के लिए लगन से काम करते हैं, बदले में, बच्चे सीखने, उत्क्रष्ट प्रदर्शन, मूल्यवान स्थिति और यदि संभव हो तो परिवार की वित्तीय स्थिरता में योगदान देकर विकसित होंगे। यह सामूहिक जिम्मेदारी सभी के लिए सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित करती है और देखभाल प्रदान करती है।

अगली पीढ़ी के उत्थान से बढ़कर जीवन में कोई बड़ी जिम्मेदारी, कोई बड़ा विशेषाधिकार नहीं हैं। सी. एवरेट कूप

संचार जिम्मेदारी:

संचार में जिम्मेदारी का अर्थ है सक्रिय रुप से सुनना, विचारों और भावनाओं को व्यक्त करना और संघर्षों को रचनात्मक रुप से हल करना।

प्रेम का पहला कर्तव्य सुनना है। - पॉल टिलिच

निष्कर्ष:

परिवारिक बंधन हमेशा अपने साथ आनेवाले कर्तव्यों और दायित्वों से जुड़े होते हैं। परिवार के भीतर अपनी जिम्मेदारियों को अपनाने से न केवल ये बंधन मजबूत होते हैं बल्कि व्यक्तिगत विकास और उद्देश्य की भावना भी बढ़ती है। संक्षेप में, परिवार के प्रत्येक सदस्य की भलाई और खुशी आपस में जुड़ी हुई है, जिससे सभी के लिए परिवार इकाई के भीतर अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को सक्रिय रुप से पूरा करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

4 शब्द जीवन सलाह

1. पारिवारिक
2. जिम्मेदारी
3. प्यार
4. सकारात्मकता

— **के.गायत्री,**
वरिष्ठ कर सहायक

यात्रा का व्यक्तित्व पर प्रभाव

साल 2020, मानव के इतिहास का एक ऐसा समय है, जिसे कोई भुला नहीं सकते। कोविड के फैलने को रोकने के लिए, मनुष्यों के हलचल में रोक लगाई गई। इस वजह से हर एक व्यक्ति के जीवन में अभूतपूर्व बदलाव आया और उसे कई प्रकार की मुश्किलों का सामना करना पड़ा। समाज के लोग अकेले पड़ गए और इस अकेलेपन की वजह से व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ा। क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसका सामाजिक गतिविधियों के बिना जीना असंभव है। इन गतिविधियों में यात्रा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

प्राचीन काल से ही मनुष्य किसी ना किसी कारण से यात्रा करता आया है। आदि मानव अन्न की खोज में और जंगली जानवरों से अपने बचाव करने के लिए एक जगह से दूसरे जगह जाने लगा। तब से यात्रा की शुरुआत हुई। जैसे - जैसे मनुष्य के दिमाग का विकास हुआ, मनुष्य के यात्रा की वजह में कई बदलाव आने लगा। अपने विकास के लिए, अन्य देशों से कारोबार बढ़ाने के लिए मनुष्य अलग-अलग स्थानों और संस्कृतियों की खोज में यात्रा करने लगा।

व्यक्ति अपने रोज-मर्रा की जिन्दगी में अपने घर से कई काम के लिए बाहर निकलता है। अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए ऑफिस या कारखाना जाना, अपनी पढ़ाई के लिए स्कूल या कॉलेज जाना, अपने दोस्त या सगे संबंधियों से मिलने के लिए- चाहे संयोग से या किसी समारोह में शामिल होने के लिए, अपने भगवान के दर्शन के लिए किसी तीर्थयात्रा जाना या फिर अपने मन बहलाव के लिए अलग-अलग जगह घूमने जाना। यह सभी विभिन्न प्रकार के यात्रा ही है जिसका इंसान के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

यात्रा चाहे किसी भी प्रकार की हो उससे मानव का व्यक्तिगत रुप से फायदा ही होता है। किसी भी यात्रा के दौरान हमें नए-नए लोगों से मिलने का अवसर मिलता है। नई जगहों के देखना उनकी संस्कृति, रहन-सहन, खान-पान का अनुभव करने का मौका मिलता है। जिन जगहों और उनके इतिहासों के बारे में हमने कभी सुना या किताबों में पढ़ा होगा उन्हें अनुभव करने का मौका मिलता है। तीर्थयात्रा करने से यात्री के मन को शांति प्राप्त होती है। कई व्यक्ति अपने शारीरिक और मानसिक स्वरूप को चुनौती देने के लिए ऊँची-ऊँची पहाड़ चढ़ना, समुद्र की सैर करना, जंगल में घूमना पसंद करते हैं। कुछ लोग स्वास्थ शिविरों में जाकर अपना ध्यान और स्वास्थ को बढ़ाने में दिलचस्पी रखते हैं।

यात्रा के दौरान प्रत्येक व्यक्ति को अपने आराम क्षेत्र से बाहर निकलना पड़ता है। इस दौरान जो भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है चाहे भाषा, मौसम या उस देश या क्षेत्र की विधियाँ हो। उन सभी समस्याओं का सामना उस पर्यटक को खुद ही करना पड़ता है, इससे वह साहसी और आत्मनिर्भर होता है। अलग -अलग परिस्थितियों का सामना करने की वजह से इंसान आत्मविश्वासी बनता है। नई-नई जगह और नई चीजों का अनुभव करने से मन में भरपूर खुशी का अनुभव मिलता है। व्यक्ति के दिमाग से थकान दूर हो जाती है और नई उर्जा से भर जाती है। इस वजह से जो व्यक्तिगत जीवन की नीरसता दूर होकर मन फुर्तीला हो जाता है।

– गोमती सुब्रमणियन,

आयकर अधिकारी

एक जीवन ऐसा भी

जीवन था मस्त मेरा सोचा ना था ऐसा हो जाएगा
सोते रहो चाहे कितना उठने को ना कोई कह पाएगा
खाने की तो पूछो मत यारों
बस कह दो खाने को बस
आज वही बन जाएगा
जीवन था मस्त मेरा सोचा ना था ऐसा हो जाएगा
बदलेंगे दिन मेरे सोचा ना था एक दिन ऐसा भी आएगा
यह सोता प्राणी कब घर से दूर चला जाएगा
खाने की अब मत पूछो यारों
अब तो कह दो किसी से तो भी कोई ना कोई लाएगा,
गर जाना होगा कहीं तो अब ना जा पाएगा
जीवन था मस्त मेरा सोचा ना था ऐसा हो जाएगा
करने लगा नौकरी अब यह सबसे कह पाएगा
सोता प्राणी अब जल्दी उठ जाएगा
ना मिलेगी चाय नाश्ता भूखे ही ऑफिस जाएगा
पूछेंगे मां-बाप क्या खाया तो नए-नए पकवान बताएगा
देगा तसल्ली झूठ पर ना खाया आज यह बता ना पाएगा
बदलेंगे दिन मेरे सोचा ना था एक दिन ऐसा भी आएगा
पूछेगा कोई की कैसा है वहां कह देगा कि सब अच्छा है
पर कैसे कट रही घर से दूर दिन रात सच बता ना पाएगा
जीवन था मस्त मेरा सोचा ना था ऐसा हो जाएगा

धीरे-धीरे बढ़ने लगी बीमारी, गिरने लगे बाल
पड़ने लगी चेहरे पर झुर्रियां यह सोच सहम जाएगा
सोचा ना था घर से निकाल कर दवा गोली ना कोई कर पाएगा
कहेंगे घर को आने को जब मां-बाप,
तो देखूंगा लगाकर छुट्टी ऑफिसर के पास
यह कह कर दिलासा दिलाएगा
जीवन था मस्त मेरा सोचा ना था ऐसा हो जाएगा
बाद करने के छुट्टी ऑफिसर
आगे छुट्टी न बढ़ाने को धमकाएगा
जीवन था मस्त मेरा सोचा ना था ऐसा हो जाएगा
लेकर मोहलत कुछ दिन की यह अब घर को जाएगा
दूर है घर इतना की चार दिन में सफर में बीत जाएगा
जीवन था मस्त मेरा सोचा ना था ऐसा हो जाएगा
देकर खुशियां चंद दिनों की,
वापस जाने का डर उसे हर रात सताएगा
जाने से पहले पूछेगी मां बता बेटा
कल क्या बना दूं तू कल क्या खाएगा
लगेगी ना भूख, ना खाने को उसका मन भाएगा
जीवन था मस्त मेरा सोचा ना था ऐसा हो जाएगा
आया था जो लेकर मोहलत मेहमानों की तरह
उठा सूटकैस हाथों में भर आंखों में आंसू वापस चला जाएगा
जाकर वापस उसी कमरे में
चीख दहाड़ मार कर,रोते हुए सो जाएगा
क्योंकि अगली सुबह करनी है नौकरी जाना है ऑफिस
और किसी से अब क्या कह पाएगा
जीवन था मस्त मेरा सोचा ना था ऐसा हो जाएगा

– **कपिल कुमार**
एम.टी.एस.

दहेज प्रथा

कविता

एक दुल्हन सजी, उसके सपने सजे, नाजों से सजी डोली,
डोली में उसके साथ सपने भी चल दिए, फिर आई कल्पनाओं की गली,
सुंदर सपने थे बहार खड़े, दहेज ने भीतर प्रवेश किया,
दुल्हन के मुख से दहेज का आकर देखा गया
दहेज की कमी ने उसके सपनो पर प्रहार किया,

मेहंदी लगे हाथो में शोले दिए गए, सेज के स्थान पर मृत्यु शैया सजी

और इस तरह दहेज रुपी दानव एक नन्ही कली को निगल गया

आखिर कब तक ये दानव हमारी बेटियों को यूँ निगलता रहेगा

अगर न रोका गया तो एक दिन ऐसा भी आएगा जब ये आपकी बेटी को भी निगल जायेगा

इसलिए हमे दहेज को समाज से हटाना होगा और संसार को सुखरूप बनाना होगा !!

नमस्कार आज मैं आपके सामने एक हिंदी प्रेमी सज्जन के उद्गार प्रस्तुत करना चाहती हूँ। जब वे मंच पर आए तो उन्होंने अपने दायें हाथ को लहराया और फिर अपनी आवाज में फरमाया रू

नमस्कार! Ladies and Gentlemen, India हमारी country है और हम India के citizens हैंहिंदी हमारी Official Language अर्थात आधिकारक भाषा है इसलिए हिंदी बोलना हमारी duty है, पर हिंदी बेचारी की तो किस्मत ही फूटी है आज कल की young generation whenever अपना mouth खोलती है, only and only English में ही बोलती है। यह completely wrong है। हमें अपनी daily life में हिंदी language को लाना होगा और इसको Worldwide बनाना होगा। Then only, मेरे और भारत माता के dreams होंगे सच ।

— **प्रेरणा**

आशुलिपिक ग्रेड

तिरुवन्नामलाई- तीर्थस्थल

यह हम कब सुनिश्चित करते हैं कि अब यात्रा पर जाना है? यात्रा एक सूक्ष्मत्तर, जटिलतम और अनन्तर अनुभव है। यथार्थ में यदि यात्रा घट जाए तो वह यात्रा न होकर तीर्थ बन जाती है। यदि रोजमर्रा के जीवन की पूरी व्यवस्था में जरा सी देर ठहर कर अवलोकन करें तो एकदम से यह संपूर्ण व्यवस्था ढह जाती है। हमारे भागदौड़ की दैनंदिनी में एक निश्चितता और नियमितता है तो एक ओर अव्यवस्थित, अनियमित ठहराव है जिसका नाम ही यात्रा है किंतु यदि यह ठहराव, यह स्थिरता घट जाए तो सच्चे रूप में यही तीर्थ है। यहाँ एक छोटी सी बात याद आती है। लगभग दस

वर्ष का एक बालक कुछ पाँच रुपए लिए घर से अरुणाचलम की यात्रा पर निकल पड़ता है और वह बालक सचमुच अरुणाचलम पंहुच जाता है। यात्रा तीर्थ हुई और बालक रमण महर्षि हुआ। तो यात्रा पर यात्री होने का चिंतन करें। गुरु कहते हैं कि हम प्रत्येक यात्रा को तीर्थ में रूपांतरित कर सकते है किंतु जब तक यह कला ना आए तब तक तीर्थों की यात्रा करें। तीर्थ यात्रा करते करते एक दिन आपका हृदय तीर्थ हो जाएगा।

तिरुवन्नामलाई, दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में हिन्दुओं का एक प्रमुख तीर्थस्थल है जहाँ अनेक मंदिर एवं आश्रम स्थित हैं। यहाँ एक प्राचीन शिव मंदिर है जिसका नाम अरुणाचलेश्वर है और इसे अग्नि तत्व का प्रतीक माना जाता है। इसे अग्नि लिंगम के नाम से भी जाना जाता है। तिरुवन्नामलाई, दक्षिण भारत में स्थित भगवान् शिव के पांच तत्वों या पंच महाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश व वायु,)को समर्पित मंदिरों में से एक है। यह मन्दिर और शहर चारों ओर से अरुणाचल पर्वत से घिरा हुआ है। यहां भगवान शिव को उनके अग्नि स्वरुप (अरुणाचलेश्वर) के रूप में पूजा जाता है। इस मंदिर में चार विशाल द्वार हैं जिन्हें गोपुरम कहा जाता है। प्रत्येक पूर्णिमा की रात और विशेष रूप से कार्तिक पूर्णिमा की रात को हजारों भक्त भारत के विभिन्न क्षेत्रों से अन्नामलाई पहाड़ी की गिरिवलम (गिरिवलम शब्द तमिल भाषा से आया है, जिसमें गिरि का अर्थ पहाड़ी और वलम का अर्थ परिक्रमा करना है) यानी भक्त अरुणाचल पर्वत की परिक्रमा करने और दीप दान करने आते हैं और फिर अरुणाचलेश्वर भगवान की पूजा करते है। यह परिक्रमा १४

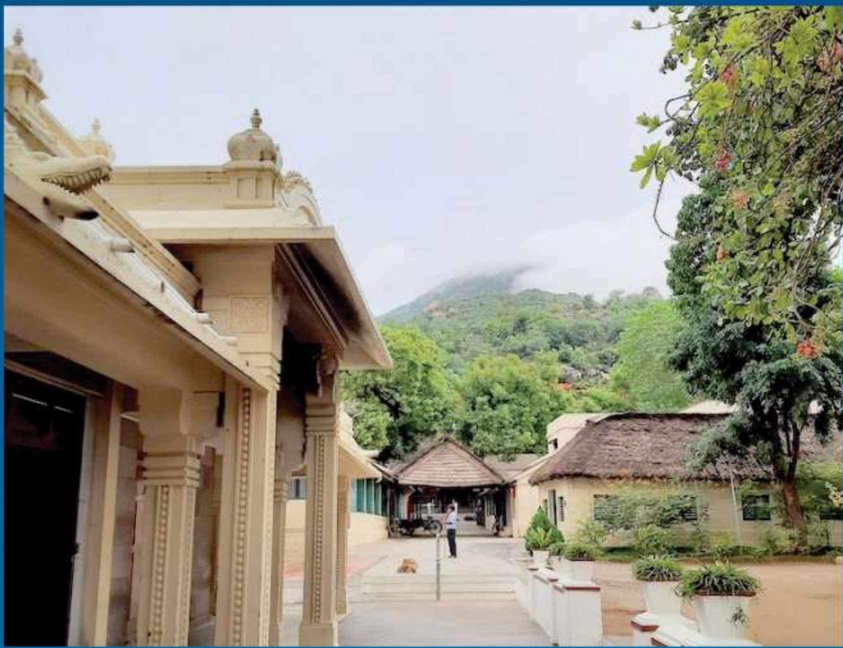

किलोमीटर की पद- यात्रा होती है। यह पद्धति उत्तर प्रदेश के मथुरा में स्थित गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा जैसी ही है। तिरुवन्नामलाई के बाहरी इलाके में एक प्राचीन जैन मंदिर का परिसर है जिसमें तीन जैन गुफाएं, चार जैन मंदिर और 12वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध जैन संत नेमिनाथ जी की 16 फीट ऊंची मूर्ति है।

श्री अरुणाचलेश्वर मंदिर का पौराणिक इतिहास - अरुणाचल पहाड़ी पर भगवान शिव के अग्नि रूप में प्रकट होने का इतिहास युगों पुराना है। पौराणिक कथन के अनुसार एक बार जब माता पार्वती ने चंचलतापूर्वक भगवान शिव से अपने नेत्र बंद करने के लिए कहा तो उन्होंने अपने नेत्र बंद कर लिए और इस कारण पूरे ब्रह्मांड में कई हजार वर्षों के लिए अंधकार छा गया। इस अंधकार को दूर करने के लिए भगवान शिव के भक्तों ने तपस्या की, जिसके कारण महादेव अन्नामलाई की पहाड़ी पर कार्तिक पूर्णिमा के दिन अग्नि स्तंभ के रूप में हुए फिर वह पार्वती के साथ विलीन होकर अर्धनारीश्वर रूप बन गए। यह पहाड़ी पवित्र है और इसे अपने आप में एक लिंग या शिव का स्वरुप माना जाता है। तमिल में, अरुणम शब्द का अर्थ है लाल या आग और मलई का अर्थ है पहाड़ी। चूंकि शिव ने स्वयं को इस स्थान पर अग्नि के रूप में प्रकट हुए इसलिए इसको अरुणाचलम नाम से जाना जाता है।

अन्नामलाई पहाड़ी के आसपास तीन योगियों (बुद्ध) के आश्रम है। महर्षि रमण आश्रम, श्री शेषाद्री जी (जिन्होंने संसार को महर्षि रमण का परिचय कराया एवं योगी रामसूरतकुमार का आश्रम तिरुवन्नामलाई के लोकप्रिय आध्यात्मिक स्थल हैं जहाँ देश-विदेश से अनेकों साधक आध्यात्मिकता की खोज में आते हैं।

रमण महर्षि (आश्रम) - महर्षि रमण 20वीं शताब्दी के दक्षिण भारत के एक बुद्ध पुरुष थे जिन्हें भगवान् रमण भी कहा जाता है और उनको भगवन शिव के पुत्र स्कंदध्कार्तिकेयन का अवतार माना जाता है। महर्षि रमण ने मृत्यु के अनुभव से सत्य को पाया और अरुणाचलेश्वर पर्वत पर वर्षों तक गहन तपस्या कर लाखों लोगों के जीवन को दिशा प्रदान की। महर्षि रमण का एक संवाद मैं पूरे आध्यात्मिक जगत में बहुत ही क्रन्तिकारी और प्रसिद्ध संवाद है। रमण महर्षि को दिव्य धर्मोपदेशों और सहज ध्यान पद्धति के लिए भी जाना जाता है। महर्षि रमण के आश्रम में प्रति वर्ष हजारों भक्त और साधक आते हैं। आश्रम के मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही आप ऊंचे पेड़ों से घिरे एक बड़े खुले आंगन में पहुंच जाते हैं। आश्रम का पिछला हिस्सा अरुणाचल पहाड़ी से घिरा है। जैसे ही आपके कदम इस पवित्र स्थान को छुएंगे, आपका चित्त कुछ समय के लिए ठहर जाएगा और इसकी ऊर्जा आपको घेर लेगी। यहां एक 400 साल पुराना इलुप्पाई का वृक्ष है। इसके ठीक बगल में पारंपरिक द्रविड़ शैली में निर्मित दो भव्य शिला स्तंभ हैं। इस प्रांगण में रमण महर्षि की माता की समाधि, लक्ष्मी गाय की समाधि के साथ अन्य समाधियाँ भी है। एक भवन में रमण महर्षि की एक प्रतिमा और उनकी समाधि पर शिव लिंग बना हुआ है और उनकी एक प्रतिमा बनी हुई है। इस स्थान पर महर्षि रमण की उपस्थिति को उर्जा के रूप में मह्सूस किया जा सकता है। आश्रम

रोजाना सुबह 5 बजे से दोपहर 12-30 बजे तक और दोपहर 2 से रात 9 बजे तक दैनिक आरती, मंत्रोच्चारण आदि कार्यक्रम के लिए खुला रहता है। आगंतुक नए महर्षि रमण के निर्वाण स्थान पर भी जा सकते हैं। यह वह कमरा है जिसमें रमण महर्षि ने अपने अंतिम दिन बिताए थे और उनके द्वारा प्रयोग की गयी वस्तुओं को सहेज कर रखा गया है। अध्यात्मिक पुस्तकों के लिए आश्रम परिसर में रमण पुस्तकालय भी है। यहाँ साधकों के ठहरने और भोजन की भी व्यवस्था है। इसके लिए आपको महर्षि रमण आश्रम को मेल के माध्यम से समय आदि सहित निवेदन करना होगा। यहां महर्षि रमण के साधन स्थल (स्कंद गुफा जो कि अरुणाचल पर्वत पर स्थित है) के दर्शन के लिए भी जा सकते है।

श्री शेषाद्रि (आश्रम) - महर्षि रमण आश्रम से लगा हुआ श्री शेषाद्रि स्वामी जी का आश्रम है जिन्होंने संसार से महर्षि रमण का परिचय कराया था। श्री शेषाद्रि को देवी कामाक्षी का अवतार माना जाता है। इस आश्रम में इनकी समाधि है जिसके दर्शन के लिए हजारों भक्त प्रतिदिन आते है।

योगी रामसूरतकुमार (आश्रम)- यह एक संत थे जिनका जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ था पर इनकी आध्यात्मिकता की प्यास इनको तिरुवन्नामलाई ले आई। श्री अरबिंदो, महर्षि रमण और श्री रामदास इनके गुरु थे। ज्ञान प्राप्ति के बाद ये तिरुवन्नामलाई में ही रहे। लंबे समय तक इन्होने अपना जीवन भिखारी और सामान्य व्यक्ति की तरह बिताया। कुछ समय पश्चात इनकी तेजस और शक्ति से प्रभावित होकर इनके शिष्यों ने एक आश्रम बनवा दिया जहाँ प्रतिदिन हजारों भक्त और साधक देश विदेश से इनकी समाधि के दर्शन, ध्यान और साधना के लिए आते है। यहाँ भक्तों के रुकने और भोजन की भी व्यवस्था है। इस आश्रम में शोध केंद्र, वेद अध्ययन केंद्र, ध्यान कक्ष भी है।

कैसे पहुंचे - तिरुवन्नामलाई तमिलनाडु राज्य की राजधानी, चेन्नई से 196 किमी और बंगलुरू से 210 किमी की दूरी पर स्थित है। यहाँ हवाई मार्ग और रेल मार्ग से पहुंचा जा सकता है। तिरुवन्नामलाई का निकटतम हवाईअड्डा चेन्नई में स्थित है। चेन्नई पहुँच कर यहाँ के अन्तर्राज्यीय बस अड्डे (कोयम्बेडू) से वातानुकूलित और सामान्य बस द्वारा तिरुवन्नामलाई पहुँच सकते है। बस में सीट ऑनलाइन माध्यम से आरक्षित करने की सुविधा तमिलनाडु परिवहन विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। चेन्नई से बस द्वारा तिरुवन्नामलाई पहुँचने में लगभग 3-4 घंटे लगते है। तिरुवन्नामलाई बस अड्डे से आश्रम और मंदिर लगभग 2-3 कि.मी. दूर हैं इसके लिए यहाँ से ऑटो रिक्शा या पैदल भी जा सकते है।

भोजन और ठहराव - तिरुवन्नामलाई में आप दक्षिण भारत के शाकाहारी व्यंजनों का आनंद पारंपरिक स्वाद के साथ ले सकते हैं जो बहुत सहज रूप से सामान्य दर पर उपलब्ध है। तमिलनाडु में दक्षिण भारतीय भोजन को केले के पत्ते में परोसा जाता है जो इसके स्वाद को दोगुना कर देता है। यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिए सर्वोत्तम स्थान है, यहाँ के आश्रमों में बने अतिथि गृह इसके आलावा होटल भी उपलब्ध है। इसकी उपलब्धता और अन्य जानकारी इनके कार्यालय के फोन और मेल के माध्यम से ली जा सकती है। उचित दामों में आपको ठहरने की व्यवस्था उपलब्ध हो जायेगी।

– सतेन्द्र कुमार सिंह,
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

वर्तमान में मानव जीवन के समक्ष चुनौतियां

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अतः सामाजिक रुप से अपने आप को प्रस्तुत करने में अत्यन्त चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जीवन की गुणवत्ता और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए चुनौतियों का होना अत्यन्त आवश्यक है। सीखने की प्रक्रिया में चुनौतियों का सामना करना स्वभाविक है। आदिकाल से ही मनुष्य के समक्ष विभिन्न चुनौतियाँ आईं हैं परन्तु इन चुनौतियों ने ही मनुष्य को नए रचनात्मक कृतियों एवं अविष्कारों के लिए प्रेरित किया है। चुनौतियाँ मनुष्य को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रुप से प्रभावित करती है। यह इंसान की मनोदिशा पर निर्भर करता है कि वह चुनौतियों को किस रुप में स्वीकार करता है।

वर्तमान में मानव को जिन चुनौतियों को सामना करना पड़ता है वे निम्नलिखित हैः-

- **मानसिक चुनौतीः—** वर्तमान में मानव जीवन के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती उसकी मानसिकता है। वर्तमान समय में व्यक्ति मानसिक रुप से उतना मजबूत स्वयं को स्थापित नहीं कर पा रहा है जितना सक्षम उसे होना चाहिए।

- **भावनात्मक चुनौतीः—** वर्तमान में मनुष्य बहुत ही कम व्यवहारिक रहा है। वह स्वयं को सोशल मीडिया एवं इंटरनेट गतिविधियों में लिप्त रखता है जिससे वह भावनात्मक रुप से बहुत कमजोर एवं अकेला हो गया है। व्यक्ति ने खुद को बहुत सीमित कर लिया है और सामाजिक सहभागिता काफी कम कर दी है जिससे वह लोगो से जुड़ाव महसूस नहीं करता और एकाकीपन को प्राप्त करता है।

- **शारीरिक चुनौती:–** वर्तमान में व्यक्ति को शारीरिक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। कई बार व्यक्ति शारीरिक रुप से इतना सक्षम नहीं हो पाता कि वह प्रतिस्पर्धा एवं दूसरों की बराबरी कर सकें जिससे उसे हताशा का सामना करना पड़ता है। बदलते परिवेश एवं वातावरण में हमें स्वयं को शारीरिक रुप से स्वस्थ रखना भी अति आवश्यक है।

- **अन्तर्राष्ट्रीय चुनौती:–** जहाँ देश वैश्विक स्तर पर उन्नति कर रहा है वहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर देखना चाहता है जिससे वह खुद को अनेक अवसरों के लिए प्रेरित करता है। उसे देश और समाज के लोगों से ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

- **व्यावसायिक चुनौतियाँ:** बदलते परिवेश में व्यवसाय के तरीकों में भी काफी परिवर्तन आए हैं ऐसे में व्यक्ति को अपने आपको व्यवसायिक रुप से प्रगतिशील नहीं करता है एवं समय के साथ नहीं चलता तो वह व्यावसायिक उन्नति नहीं कर पाएगा।

- **एकाग्रचित एवं धैर्य रुपी चुनौतियाँ:** वर्तमान में मनुष्य के सामने सबसे बड़ी चुनौती उसकी एकाग्रता है। व्यक्ति को अपना धैर्य स्थापित करने में बहुत ही कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अतः उसे इस चुनौती से लड़ना चाहिए एवं स्वयं को एकाग्रचित करने का प्रयास करना चाहिए। एकाग्रचित होकर व्यक्ति अनेक कार्य सुचारु रूप से नहीं कर सकता है।

- **सामाजिक चुनौतियाँ:–** जैसा कि विगत है कि मनुष्य सामाजिक इकाई है। हमेशा से ही व्यक्ति को खुद को साबित करने के लिए चुनौतियों का सामना करना पड़ा है जिससे व्यक्ति पर सामाजिक दबाव भी रहता है। व्यक्ति जिस समाज में रहता है यदि वह उस समाज से पृथक कोई निर्णय लेता है यया कार्य करता है तो समाज में उसे हीन भावना का शिकार होना पड़ता है एवं अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

- **दृष्टिकोणात्मक चुनौती:** आज व्यक्ति का दायरा बहुत ही विशाल एवं व्यापक है। वह सुदूर देशों की यात्रा करता है एवं विभिन्न लोगों के सम्पर्क में आता है। जिससे उसकी सोच का विकास होता है और दृष्टिकोण में भी प्रभाव पड़ता है। उसका दुनिया को देखने के नजरिये में फर्क हो सकता है, हो सकता है बाकी लोगों का दृष्टिकोण उस वस्तु विशेष पर कुछ और हो जिससे दृष्टिकोण में विभिन्नता देखने को मिलेगी अतः आज व्यक्ति का दृष्टिकोण भी चुनौती के रुप मेंआता है।

चुनौतियों भले ही आपको विचलित एवं परेशान करती है परन्तु यह आपके मन में अदम्य साहस एवं आत्मविश्वास का सृजन भी करती है। चुनौतियों आपकों मजबूत एवं लक्ष्य के प्रति केंद्रित करती है। यदि आप सकरात्मक दृष्टिकोण से चुनौतियों का सामना करते हैं एवं उन पर विजय प्राप्त करते हैं तो निश्चय ही आप अपने जीवन और खुद को बेहतर कर सकेंगें।

- चुनौतियाँ आपको निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है और आत्मविश्वासी बनाती है कहा भी गया है कि "डरा वही जो लड़ा नही"

- अतः अपने समक्ष आने वाली हर परिस्थिति का सामना करे और खुद को सकारात्मक बनाएँ।

- रास्ते जितने दुर्गम होंगे, मंजिल उतनी ही सुहानी होगी।

- अतः जीवन जितना चुनौतीपूर्ण होगा, उतना ही उज्ज्वल, आलौकिक और प्रेरणा पूर्ण होगा।

– **प्रिया मिश्रा**
आयकर निरीक्षक

By: S. Pritika
d/o M. Senthil, ITI

By : Anusha Korivi, ITI

‘अन्नम’ कैंटीन का उद्‌घाटन
Inauguration of 'Annam' Canteen

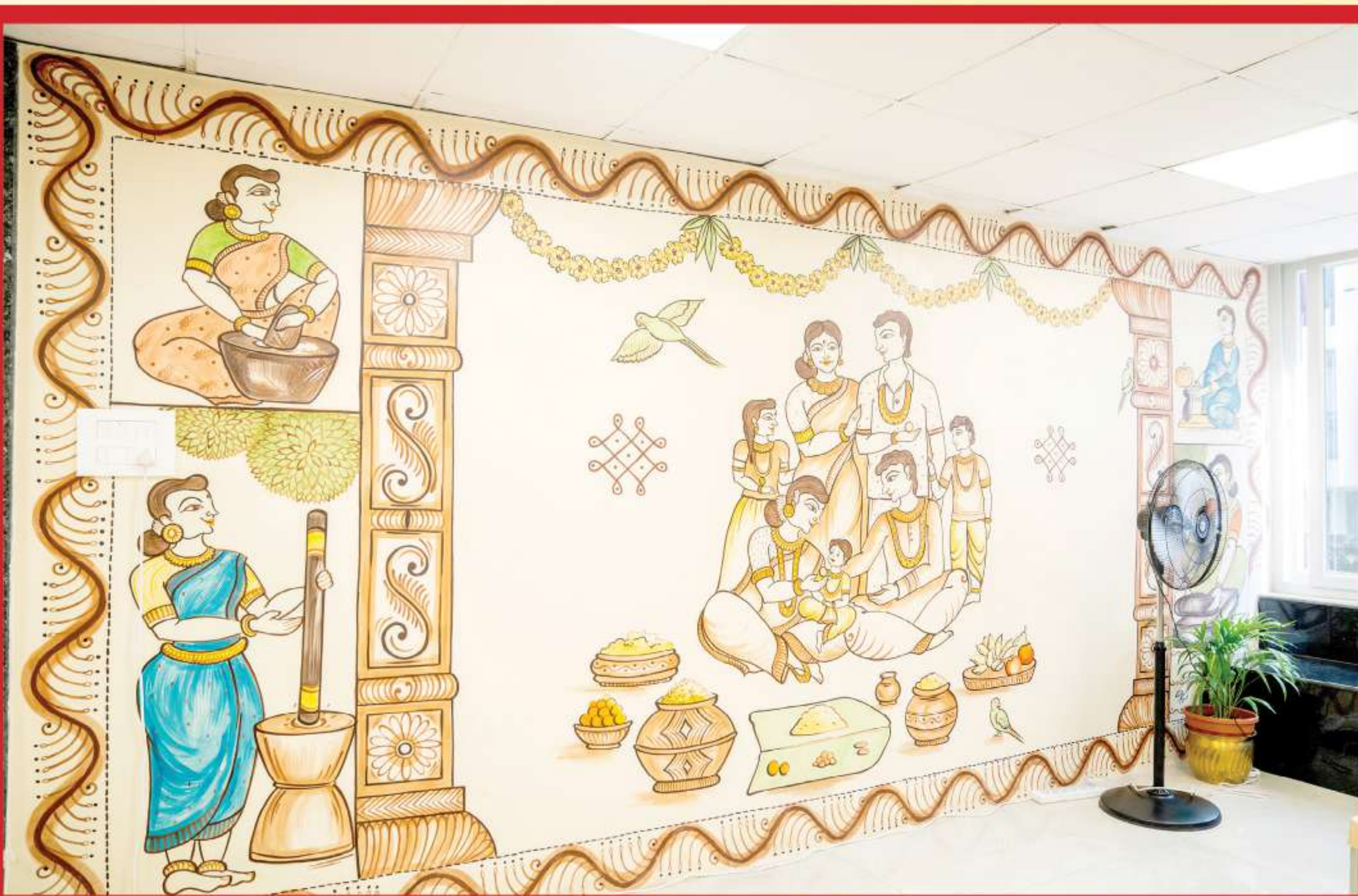

विवेकानंद अरंगम का उद्घाटन
Inauguration of Vivekananda Arangam

भारत में G-20 और इसका अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

1975 में G-7 के रुप में विकसित देशों को एक वैश्विक मंच मिला। जिसके माध्यम से वे अपनी अर्थव्यवस्था को एक अंतर्राष्ट्रीय मंच रखकर त्वरित गति दे सके।

1991 में सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् "समाजवादी अर्थव्यवस्था" वाले कई देश मुख्यत: एशिया और पूर्वी यूरोप, के देशों की अर्थव्यवस्था डगमगाने लगी। कई देशों को मजबूरन अपनी अर्थव्यवस्था का "अवमूल्यन" करना पड़ा ताकि वे अपने नागरिकों की सामान्य जरुरतों को पूरा कर सकें।

उपर्युक्त कारणों के परिपेक्ष्य में ही "विकासशील देशों" का एक समूह बनाकर 1999 में G-20 की स्थापना की गई ताकि जो देश अर्थव्यवस्था के लिहाज से पिछड़े हुए हैं, उन्हें एक वैश्विक मंच प्रदान कर मुख्य धारा में लाया जा सकें। 1999 में G-20 की बैठक विभिन्न मंत्रालयों के मंत्रियों द्वारा आयोजित होती थी परन्तु 2008 से संयुक्त राज्य अमेरिका के सुझाव पर राष्ट्राध्यक्षों की बैठक भी होने लगी।

G-20 का कोई मुख्यालय नहीं है इसके कार्य हेतु किसी एक देश को पूरे एक साल की अध्यक्षता दी जाती है, तत्पश्चात् उस देश द्वारा एक शेरपा की नियुक्ति की जाती है, जो विभिन्न बैठक व आयोजकों के कार्यक्रम का कार्यान्वियन करता है। 2022 में इंडोनेशिया में हुई बैठक में भारत को 2023 के लिए अध्यक्ष चुना गया है, जिसके शेरपा "अमीताभ कांत" है, तथा 2024 के लिए भारत ने G-20 की अध्यक्षता ब्राजील के राष्ट्रपति लूला - डी- सिल्वा को सौंपी है।

चूँकि वर्तमान समय में कोई भी देश अपने को वैश्विक अर्थव्यवस्था से अलग-थलग नहीं रख सकता और ऐसे में भारत जो विश्व की, यू.एस.ए, रुस, चीन एवं जापान के बाद ब्रिटेन को पीछे छोड़ पांचवी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है, G-20 अध्यक्षता करने पर दुनिया के सामने एक वैश्विक नेता की भूमिका निभाई है, जिसका सकारात्मक परिणाम अर्थव्यवस्था पर पड़ा है।

G-20 के तीन लक्ष्य है जो इस प्रकार है-

1. पर्यावरण के लिए जीवन शैली
2. महिला सशक्तिकरण
3. समावेशी न्यायसंगत एवं सतत् विकास

पर्यावरण के लिए जीवन शैली:- औद्योगीकरण के इस देश में हम विकास के लक्ष्य पर पर्यावरण की बलि नहीं चढ़ा सकते इसलिए हमें ऐसे विकास के पथ पर चलना होगा जो पर्यावरण-अनुकूल हो। अन्य देशों की तरह भारत भी पर्यावरण की समस्या से जूझ रहा है तथा कई शहरों की वायु गुणवत्ता खतरे के निशान पर है। ऐसे में इस संगठन के माध्यम से एक समावेशी रास्ता निकलेगा जो भारत के पर्यावरण अनुकूल अर्थव्यवस्था के लिए उपयोगी साबित होगा।

महिला सशक्तिकरण:- जब हम विकास की बात करते हैं तो हम देखते हैं कि महिला सशक्तिकरण के बिना किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के गतीशील होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ऐसे में G-20 के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर बल देना भारत के अर्थव्यवस्था के हित में होगा क्योंकि विकासशील देशों में विकसित देशों की अपेक्षा इस बिन्दु पर एक बड़ा अंतर देखने को मिलता है। यूरोपीय अथवा विकसित देशों में महिला सशक्तिकरण अच्छी स्थिति में है। अत: भारत इस वैश्विक भय का उपयोग कर दुनिया के अन्य देशों के साथ ताल-मेल बिठाकर महिला सशक्तिकरण को मजबूत स्थिति में ले जाकर अपनी अर्थव्यव्स्था को गति दे सकता है।

समावेशी न्यायसंगत एवं सतत् विकास:- अगर सबसे महत्वपूर्ण बिंदु की बात की जाए तो यही है कि समावेशी (अर्थात सबको मिलाकर) न्यायसंगत (न्याय के अनुरुप) सतत् (लगातार) विकास ही अर्थव्यवस्था को गति दे सकता है। इस मंच के माध्यम से G-20 के सभी देश एक ऐसी संरचना का निर्माण करे जिससे विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था विकसित देशों अथवा पूंजीवादी देशों के कतार में खड़ी हो।

भारत जैसा देश जो 140 करोड़ की आबादी वाला देश है, जिसे स्वयं भारत की वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन जी ने कहा है कि हम इस जनसंख्या को एक अवसर के रुप में देखते है। भारत एक वैश्विक बाजार है या ये कहें कि दुनिया का सबसे बड़ा बाजार है। G-20 की स्थापना ने दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियों को भारत में निवेश करने का भरोसा दिलाया है, स्वयं भारत सरकार ने भी कई ऐसे जटिल कानूनों को समाप्त किया है जो निवेश में बाधा उत्पन्न करते थे।

अब G-20 को G-21 कहा जाएगा चूंकि भारत ने एक अग्रणी नेता की भूमिका अदा करते हुए "अफ्रीकन यूनियन" को भी G-20 में शामिल कर लिया है।

उपर्युक्त तथ्यों से यही पता चलता है कि भारत की छवि अब वैश्विक मंच पर एक सफल नेता के रुप में हुई है। जिसका फायदा भारत की अर्थव्यवस्था को मिलेगा। भुगतान संकुलन के माध्यम से भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत और सतत् होगी।

G-20 की थीम "वसुधैव कुटुम्बकम" अर्थात् एक धरती, एक परिवार, एक फ्यूचर है। यह थीम भी भारत की संस्कृति से प्रेरित है। हालांकि इसके बावजूद भी भारत को धरातल पर कार्य करने होगें तभी अर्थव्यवस्था को चौतरफा गति मिलेगी।

– राहुल कुमार,
बहु कार्य कर्मचारी

उड़ान

यह कहानी एक खूबसूरत जवान स्त्री राधा की है जिसने अपने घोंसले से बाहर आकर पंख फैलाकर आसमान को छूने का साहस किया।

राधा का जन्म एक सुसंपन्न परिवार में हुआ था। उसका बचपन बड़ी हंसी-खुशी से बीता। अपने माँ-बाप के आग्रह से उसने सातवीं कक्षा तक पढ़कर अपनी पढ़ाई छोड़ दी पर वह हमेशा उनकी प्यारी लाडली रही। सोलह की उम्र पार करते ही, उसका विवाह एक पढ़े-लिखे और सुंदर युवक के साथ हो गया। राधा का पति, श्याम एक निजी कार्यालय में प्रबंधक था।

पहले राधा का जीवन बड़े सुख से बीतने लगा। पास-पड़ोस की स्त्रियाँ उसके सुंदर और कीमती गहने-कपड़े देखकर स्तब्ध रह जाती थीं। हर रोज उसके घर में मीठे पकवान बनाए जाते थे। वह अपने आपको बड़ी भाग्यशाली समझती थी। फिर उसको एक लड़की पैदा हुई । उसका नाम श्रुति रखा।

पर अफसोस,राधा का संतोष एक सपना निकला। उसका पति श्याम एक कार-दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो गए। राधा अपनी तन-मन-धन से उनका सेवा और इलाज कराया परंतु सब बेकार हुआ। श्याम का निधन हो गया और अब राधा एक बालिका शिशु को लेकर अकेली रह गई।

राधा के विधवा होते ही उसके ससुरालवाले ने "डायन" कहलाकर उससे मुँह फेर लिया। उसकी माँ-बाप खुद उसके भाई के कमाई पर निर्भर थे इसलिए उनकी तरफ से भी कोई सहायता नहीं मिली। इसलिए ससुराल का एक कोना ही उसका आश्रय स्थान बन गया। हँसना-बोलना राधा के लिए अपराध था। वह ठीक से रो भी नहीं सकती। विधवा का रोना भी समाज की दृष्टि में अशुभ माना जाता था। राधा के कई सारे पड़ोसी थे मगर वे सिर्फ नाम के थे। किसी ने भी अपना पड़ोसी धर्म नहीं निभाया। इनमें से एक पड़ोसन टीचर थी जो राधा की परिस्थिति से भलीभांति वाकिफ थी।

एक दिन उस टीचर ने राधा को अपने पास बुलाया और समझाया "देखो राधा, कुछ दिनों के लिए अगर मैं तुम्हारी मदद करुँ तब भी उससे तुम्हारी कोई भलाई नहीं होगी। अगर तुम्हें अपनी परिस्थिति बदलनी है तो तुम्हें खुद ही इसमें बदलाव लाना पड़ेगा"।

राधा ने कहा, "भला मैं कर ही क्या सकती हूँ? मेरे पास तो कोई नौकरी भी नहीं है? पढ़ाई भी अधूरी है"।

टीचर ने कहा, "नहीं-नहीं राधा, मैं तुम्हें नौकरी करने के लिए नहीं कर रही हूँ। मैं जानती हूँ कि तुम कढ़ाई-बुनाई का काम बहुत अच्छी तरह करती हो। बस इस काम में अपना मन लगा दो जितना ज्यादा कर पाओगी, उतना काम करो। राधा ने भी वैसे ही किया। थोड़े दिन में उसको जीवन यापन के लिए कमाई होने लग गई। देखते ही देखते, एक साल बीत गया। साल के अंत में राधा के पास पचास हजार रुपये बचे थे। अपनी एक दोस्त की सिफारिश से उसे एक विलायती आर्डर भी मिला। उसने बैंक से लोन लेकर अपनी बुनाई का फैक्ट्री लगायी और अब उसके नीचे दस-पंद्रह औरतें काम करती हैं। अब राधा एक फैक्टरी की मालकिन बन गई। अब वह अपनी बेटी का पालन-पोषण खुद करती है और दूसरों की मदद भी करती है।

सीख: जीवन में हमेशा आगे बढ़ना चाहिए। किसी भी हालत में हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

– एस.अबिरामी, आयकर अधिकारी

प्रकृति से विचरित मानवजाति का बोध

एक दिन, प्रातःकाल, भाग दौड़ भरी जिंदगी से निकलकर, प्रकृति के सौंदर्य का आनंद लेने के लिए समुद्र के किनारे बैठकर, एक आदमी, भौतिकीय अर्थात विचलित मानव जाति पर मंथन करने का प्रयास करता है जिसमे वह खुद भी लिप्त था।

तभी उसकी नजर समुद्र की लहरों पर जाती है जो उससे उमड़ उमड़ कर कुछ कहना चाहती हैं लेकिन आदमी अपने अहंकार में बैठा हुआ कुछ समझ ही नहीं पा रहा है उसी समय एक शीत हवा का झोंका आता है और आदमी के अंतःकरण को झकझोर देता है। अचानक एहसास होता है, मन शांत थोड़ा हुआ है तब लहरों की आवाज सुनाई देती है अर्थात लहरें कहती हैं।

ओ अज्ञानी! देख तू कितना नादान है, तुझे प्रक्रति से थोड़ी शक्ति मिली, भौतिक दुनिया में थोड़े अधिकार मिले। वास्तव में, यह सब मिला है तुझे प्रकृति को समृद्ध बनाने के लिए अर्थात अपने जीवन के प्राकृतिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए लेकिन तूने तो अपने आपको सर्व शक्तिमान मान लिया, सब कुछ अपने अधीन मान लिया अर्थात अपनी शक्ति का प्रयोग असहायों को सताने एवं कमजोरों का उत्पीड़न करने में किया और जब भी मौका मिला वहीं अपना लालचीपन, स्वार्थीपन एवं संकीर्ण सोच दिखा देता है।

देख अज्ञानी, मेरे (लहरों के) सामने तू कुछ भी नहीं है जिस दिन तेरी तरह मैं भी अज्ञानता दिखा दूँ अर्थात अमर्यादित हो जाऊँ तो यह जो हरी -भरी धरती खुशहाल दुनिया देख रहा है ना, एक पल में नष्ट हो जाएगी, सब प्रलयमय हो जाएगा, ना तू रहेगा ना तेरी अज्ञानता इसलिए समय रहते सुधर जा, प्राकृतिक हो जा अर्थात अपने जीवनीय भाव को परम आनंदमयी प्रक्रति में समाहित कर दे।

यह सब सुनकर उस आदमी का ह्रदय अपराध बोध से फूट पड़ा।

कहीं आप भी तो वो अज्ञानी नहीं हैं?

– **रोहिताश सारस्वत**

आयकर निरीक्षक

शिक्षा और संघर्ष

आज अम्बेडकर कॉलोनी में काफी हलचल दिख रही है। आज इस कॉलोनी में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का उद्घाटन है। बच्चे बूढ़े महिलाओं में ज्यादा उत्सुकता है। थोड़ी देर में ही सफेद रंग की मर्सडीज जिसपर लाल बत्ती लगी थी, आकर झुग्गियों के एक खाली जगह पर रुकती है। पीछे से पुलिस की गाड़ी जल्दी-जल्दी भीड़ को व्यवस्थित करने लगती है। थोड़ी देर बाद एक महिला नीले रंग की साड़ी में कार से बाहर आती है। साथ में उसके सहयोगी एवं अन्य अधिकारी धीरे धीरे झुग्गियों के बीच बने संकरे रास्ते से आगे बढ़कर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के भवन के सामने खड़े हो जाते हैं। उद्घाटन का रिबन काटा जाता है और तालियों की गड़गड़ाहट से आकाश में एक विक्षोभ पैदा होता है। पक्षी फड़ फड़ की आवाज के साथ उड़ जाते हैं।

उद्घाटन के बाद महिला जो कि जिलाधिकारी है, वह आस-पास भवन के चारों तरफ वृक्षारोपण हेतु आगे बढ़ती है। भवन के पीछे की ओर एक वृक्ष रोपना था कि उसके दरमियान एक छोटी सी भीड़ जो कि विशाल बरगद के वृक्ष के नीचे कुछ क्रियाकलाप में लीन थे, उत्सुकता बढ़ी कि सारी झुग्गी की भीड़ यहाँ एकत्रित है परंतु कुछ लोगों की भीड़ अलग किस चीज में व्यस्त है।

वह अपने अधीनस्थ अधिकारियों एवं अर्दलियों के साथ उस बरगद वृक्ष की ओर बढ़ती है। थोड़ा पास जाने पर बड़ा ही मनोरम एवं अलग अनुभव होता है। एक बारह-तेरह साल का बच्चा कुछ एक दो दर्जन हम उम्र के बच्चों को गणित पढ़ा रहा है। वृक्ष के नीचे ब्लैक बोर्ड रखा है और पंक्तियों में बच्चे पढ़ रहे हैं। कलेक्टर साहिबा पास पहुँचती है भीड़ देखकर बच्चे खड़े हो जाते हैं। प्यार से वह बाल-शिक्षक के समीप जाकर पूछती है क्या नाम है तुम्हारा?- प्रत्युत्तर में- सोमनाथ, आगे सवालों की बौछार। बच्चा बड़े इत्मीनान से उत्तर देता जाता है। बच्चे के जवाब से पता चलता है कि पास में एक मध्य विद्यालय है जहाँ बच्चे पढ़ने तो जाते हैं, परन्तु शिक्षक वहाँ कुछ ही आते हैं। अतः बच्चों की शिक्षा सुचारु रुप से नहीं मिल पा रही है और अधिकांश बच्चे गणित में अनुतीर्ण हो जाते हैं। बाल-शिक्षक उसी झुग्गी में एक मोची का लड़का था जो कि पढ़ने में काफी होशियार था और उसने अपने कॉलोनी के बच्चों को जितना संभव हो सके पढ़ाता था और गणित के सवालों को हल करने में मदद किया करता था।

जिलाधिकारी बच्चे के इस जज्बे से काफी प्रभावित किया। तत्काल अपने अधीनस्थ अधिकारियों को शिक्षकों पर उपयुक्त कार्यवाही का निर्देश देकर और वैकल्पिक व्यवस्था का आदेश देकर पुनः वह अपनी सरकारी गाड़ी में बैठ जाती है।

गाड़ी शुरु होती है और बैठे-बैठे वह अपने अतीत के सागर में गोते लगाने लगती हैं। उसे याद है वह जब दस वर्ष की बालिका, राधिका थी तब उसके दोनों माता-पिता का हैजा की महामारी में देहांत हो गया। उस अनाथ का पालन-पोषण एक पादरी ने किया था और उसे एक विधवा औरत के सुपुर्द कर एक परिवार दिया था। उस विधवा और पादरी के सहयोग से उसने शिक्षा पूरी की और आज जिलाधिकारी के पद पर आसीन है। वह भी जब छठीं कक्षा में थी तो वह गणित में बहुत होशियार थी और छठी कक्षा की छात्रा होते हुए भी आठवीं के प्रश्न चुटि्कयों में हल कर दिया करती थी। फादर ने उसे इसी दिलचस्प प्रतिभा के कारण संध्या में चर्च के उद्यान में गरीब बच्चों को निःशुल्क ट्यूशन पढ़ाने का कार्य दिया था। उसके प्रयास से अधिकांश बच्चों का परीक्षाफल काफी अच्छा आता था और उनमे से अधिकांश बच्चे सफल जिंदगी जी रहे हैं। उसे गरीबी एवं अभाव का देश मिला था। परंतु अभाव को अपनी प्रगति के मार्ग का बाधक नहीं बनने दिया बल्कि और ज्यादा उसे चुनौती समझ आगे उन्नति करती गई।

सहसा उसकी गाड़ी एक छोटे से मोहल्ले से गुजरती है, सड़क के किनारे एक महिला मिट्टी के बरतन बेच रही होती है और पास में उसके तीन बच्चे जमीन पर बैठे कुछ पढ़ रहे होते हैं। वह गाड़ी चालक को रुकने के लिए बोलती है, परन्तु तुरंत ही पुनः गाड़ी चालू करने का आदेश देती है।

पता नहीं किसी चीज ने उसे रुकने के लिए प्रेरित किया और तुरंत ही अगले ख्याल ने आगे बढ़ने के लिए मन में मंथन चलता है। स्वयं के अंदर वह सोचती है: भारत में अब शिक्षा किसी की सुविधाओं एवं सरकारी नियम की मोहताज नहीं रही । लोगों में वह एक जुनून एवं अच्छा करने का प्रयास ही उसके आगे आने वाली सारी बाधाओं को पार करने में मदद करता है। स्वयं समाज में शिक्षा के लिए अलख ज्योति जल चुकी है। गरीब अमीर सब अपने स्तर के जीवन की बुनियादी एवं मौलिक अधिकार को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है।

– **सागर कुमार**
आयकर निरीक्षक

हिन्दी दिवस पर आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताएं
Hindi Competitions organised on the occasion of Hindi Day.

न.रा.का.स., चेन्नै द्वारा आयोजित हिंदी वाक् प्रतियोगिता
Hindi Elocution competition organised by TOLIC

THE MOON'S JOURNEY

In the sky, the moon walks alone,

Intercepted, but rises up and walks again,

No tear, no smile, but only determined,

Hampered by the dark veil in her journey,

No oppose, no courage but walks proceed,

Some commend, some reject, but sthe

Cares not, no comment, only moves on.

Sunil Kumar Chowdhary

Junior Translation Officer

TEACHERS

I like my teachers, they show the way help me learn, brighten every day. Their smart advice like shining light, make learning a joyful flight. Their guidance help me like a star in the night. Studying is like a mart, Teachers make it a wonderful art, and in our lives it plays an important part So... I like and respect my teachers.

G. Raghav Krishna, VII Standard

S/o P.Gowtham, (ITI)

TO THE ONE WHO SPOKE THE SAME LANGUAGE

Unknown people.
Empty talks
into the new world.
Oasis to the caravan
in the middle of the desert.
The day I met you.
Comforts and efforts.
Etiquette over habit
in a father's school.
Thank you. Forlorn twin
in the past says with tears of joy.

RAMA LAGUDU
ITI

STRINGS OF DILEMMA
THE CALL OF FATE

"Fragile strings, holding tight.
The Brain and Heart in endless fight.
Torn between reason and love.
As puppets in the hands above.
Time and fate, the silent guide.
One we follow, one we hide.."

Chandana ITI

READ

A book is said to be a magic garden in our pocket" As a child I was mesmerised by Enid Blyton's books and 1 dreamt to be the "Naughtiest girl in the school" while in practise I was almost the most polite child in the whole school. But dreaming about the Naughtiest girl fulfilled all my imaginary wishes. And then I started being the curious nosy and wise Miss Marple created by Agatha Christie and wished that I would grow into that sweet old spinster solving crimes just like that. I imagined that, even "the interpol" would come to me seeking my deductive answers regarding international crime syndicates. Then entered MsP.D. Games with "An unsuitable job for a woman" and desires and devices" where I became Adam Dagliesh, that police detective who respected human beings even when they are dead and become bodies. I read her wih great relish. And from there I suddenly travelled to the world created by William Somerset Maugham, that I wished against all factual evidence that I should marry him (though I know his sexual identity is Mulifaceted). I read almost all his books. If you want a satire on hypocrisy , go to him. And then "Rebecca" visited me. Daphne Du Maurier's female Characters inspired me and made me evolve, Needless to say, I admire Daphne's cute pixie like face and contrast it with women who are capable about everything right from decorating ladies room and sailing on high seas alone, dispite all their faults. Her characters are multi-faceted and her picturesque description is amazing. Retire to a cosy place with a cup of coffee and settle down with the books created by Daphne. But yeah, you should be non-Judgemental, prepared for gloom as well as darkness and yet her books are full of light. For warmth, human kindness and fairness, read, Harper Lee and her one and only book "To kill. a mocking bird". I Promise you warmth in the arctic zone. Margaert Atwood troubles me while Elizabeth Strout amazes me. On any rainy day give me 500 bucks and I will walk down to the nearest book store to purchase a book. It would be pure bliss. By the way, did you read Katherine Mansfield's "Bliss"? Don't mistake me for a feminist. I am very well aware of men's problems, and books. I read a lot of Sidney Sheldon, Bob Bryson, Anthony Doerr, Marcus Zusak and soo many other classic writers who made this world such a brighter and delightful place. But then, I am not writing a research paper. Oh I forgot, Please don't forget to read Hilary Mantel. Happy reading friends.

D.KOMALI KRISHNA.I.R.S

CIT

अन्ना नगर में पूंकुडिंल अतिथि गृह का उद्घाटन
Inauguration of Poonkudil Guest House at Anna Nagar

तेंड्रल कैफेटेरिया का उद्घाटन
Inauguration of Tendral Cafeteria

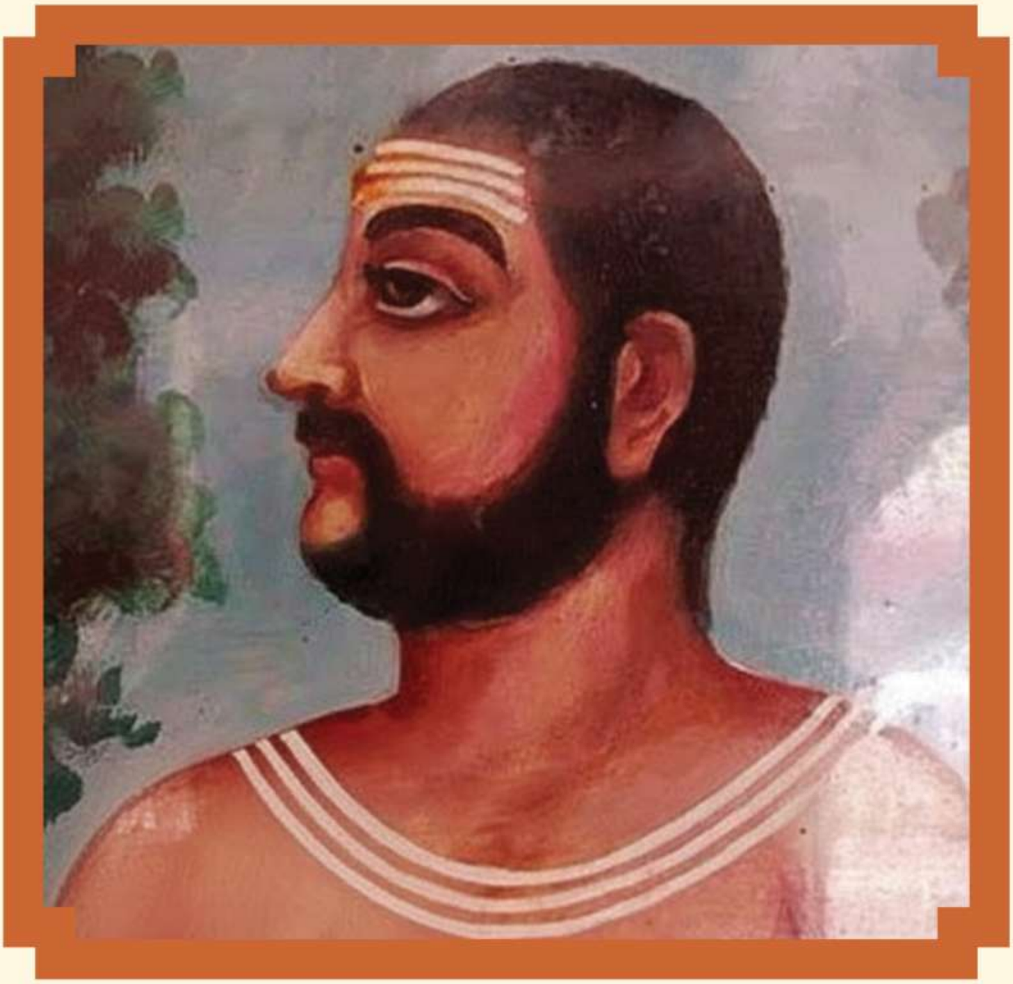

THE GREAT SAINT

SADASIVA BRAHMENDRA

Vivekananda said, 'I challenge anybody to show one single period of her national life when India was lacking in spiritual giants.' India went on producing sages with positive outlook, sublime thoughts. Such spiritual gems of India silently contributed to the well-being of the whole world.' One such saint is Sada Siva Brahmendra born to a great pandit named Moksha Somasundara Avadhani. He prayed to Rama and Krishna while his wife Parvathi prayed to Shiva. As a result their son was named Siva Rama Krishna.

Sadasiva Brahmendra was a saint, composer of Carnatic music and Advaita philosopher. He was the sishya of the 57th Shankaracharya of Moolamnaya Sarvajna Shri Kanchi Kamakoti Peetham, Shri Paramasivendra Sarasvati(II), who lived near Kumbakonam, Tamil Nadu, during the 18th Century. The Guru was impressed by the Chaitanya in him and addressed him 'Sada Siva'!

Sadasiva lived in Kumbakonam, in Tamil Nadu in the 17th to 18th century. He went to learn vedas and other various subjects in Sanskrit in Thiruvisanallur. His contemporaries such as Sridhara Ayyavaal and Sri Bhagvan Nama Bodendral (59th Jagadguru Shankaracharya of Moolamnaya Sarvajna Shri Kanchi Kamakoti Peetham) lived in the nearby areas at that time.

As the story goes, Sadasiva, one day came home hungry. His mother asked him to wait as guests had arrived and after serving lunch to them she will serve lunch to him. Actually, guests had arrived for the Nischayathartham for Sadasiva. He was 15 years old then. He was provided with food but much later. Due to the persuasion of his parents, he got married at the age of 16. After his wife attained puberty, the first night was arranged, which he was not interested in. He stepped out of the room

as he was feeling hungry. He stood at the door step of kitchen and pleaded that he is hungry. He was asked to wait for some time. He insisted he was terribly hungry and asked to serve a simple meal. "Don't step in, stand there."

A turning point in life comes in a split second and quite unexpectedly, 'the above words conveyed a deeper message.' Don't step, into Gruhastasram, stand outside and seek knowledge was the implied message. The human beings who could not satiate his hunger, how will they quench his thirst for knowledge? That decided his fate. The next minute he came out of the house. How can he be traced when he is in search of the infinite knowledge.

Shivaramakrishna left his home in search of Truth. He became the sishya of the 57th Jagadguru Shankaracharya of Moolamnaya Sarvajna Shri Kanchi Kamakoti Peetham Sri Paramasivendra Saraswati (II). He started aathma vichara and received mahavaakya upadesas from his guru. After taking sanyasa, he wandered naked or semi-naked, and often in a trance-like state. He often meditated, and being in a "supremely intoxicated state".

On the river banks of Cauvery in Mahadhanapuram, he was asked by some children to be taken to Madurai, more than 100 miles away, for an annual festival. The saint asked them to close their eyes, and a few seconds later they reopened their eyes and found they were in Madurai.

The next day, another youth, incredulous at hearing this story, asked Sadasiva to take him also to this festival. It is said that the youth immediately found himself in the distant city. When it was time to return, Sadasiva was nowhere to be found. The youth had to make his way back on foot.

Whilst relaxing near a heap of grains, he began meditating. The farmer who owned the land mistook Sadasiva for a thief, and confronted him. The farmer raised his stick to hit the saint, but became a statue. Inspite of the pleadings made by the villagers, the farmer remained in this state until the morning, when Sadasiva finished meditating and smiled at the farmer. The farmer was restored to his normal state, and asked the saint for forgiveness.

At another time, while meditating on the banks of the Cauvery river, he was carried away by a sudden flood. Weeks later, when some villagers were digging near a mound of earth, their shovels struck his body. He woke up and walked away.

Once the naked sanyasi was seen walking right through a muslim harem of a Nawab. As a Brahma-Gnani who sees nothing but brahman everywhere, it was in this state of trance that he was walking along. He, the naked sanyasi, walked straight into the harem, entering it at one end and walking out at the other all the while walking through a maze of inmates of the Nawab's harem. The news reached the nawab, he had his men chase him, they cut off both his hands as he was walking along, the hands fell off and ... still he was walking along silently as if nothing had happened. The nawab got scared, picked up the hands that had been severed, ran to the Sage and offered them in total guilt for a wrong committed. The sage stopped his walking, the severed hands were restored to their place, the hands became normal and the sage walked away! There was no conversation.

He is said to have met the Raja Thondaiman of Pudukottai and initiated him into the Dakshinamurthy Mantra. He is said to have written the mantra on sand. This sand was picked up by the King. This Mantra is found in the Dakshinamoorthy temple inside the Pudukottai palace in Pudukottai., which is in the worship of the royal family till now.

PRASANNA VENKATESWARA TEMPLE

He was responsible for installing the deity Punnainallur Mariamman near Thanjavur and guided the installation at Devadanapatti Kamakshi temple. He was also involved in the Thanthonimalai Kalyana Venkatesa Perumal temple at Karur. He also installed the Hanuman Murthi in the Prasanna Venkateswara temple at Nalu Kal Mandapam in Thanjavur. He instructed King of Tanjore to start the Saraswathi Mahal Library which runs till date.

He also installed Lord Ganesh and a powerful Ganesh Yantra at the Thirunageshwaram Rahu Stalam temple at Kumbakonam. An inscription in the temple bears testimony to this fact. The shrine can still be seen at the entrance to the temple.

There is a shrine for him in the Nandrudayan Vinayaka Temple, Trichy.

He has five samadhis :

1. **Nerur (Tamil Nadu)**
   Situated on the banks of Kaveri river in a village called Nerur, in Karur district in Tamil Nadu, India. There is a siva temple and 'Bilva Vruksham' on the banks of Kaveri river. In the temple lies the samadhi of the great saint. Pilgrims flock together to have his darshan.
2. **Manamadurai**
3. **Omkareshwar**
4. **Kashi**
5. **Karachi**

Every year in Nerur and Manamadurai, music festivals are conducted in his honor. In Manamadurai his samadhi is located at the Somanathar temple. Sri Sri Sacchidananda Shivabhinava Nrusimha Bharati, pontiff of the Tunga Sringeri Saradha Peetham had visited Nerur and composed two slokas in praise of Sri Sadasiva Bramhendra - Sadasivendra Stava and Sadasivendra Pancharatna one of the slokas start thus -

"Yatsandarshana Maathrath Bhakthir Jyadapya Viddakarnasya
Tat Sandarshana Mathuna Kritva Noonam Kritharthosmi......"

beautifully rendered by Shri T.M Krishna and Smt. Sangeeta Sivakumar.

Sadasiva-brahmendra's songs are so delightfully full of this blissful divine experience that they are even now constantly rendered by musicians in concerts and public gatherings. When they are rendered, no doubt the moods of the listeners will be elevated . The song were composed in Sanskrit a few of which are as mentioned below:-

mAnasa samcara re, brahmaNi mAnasac samcara re ... (Hey mind, dwell on brahman ...)

sarvam brahma-mayam, re re sarvam brahma-mayam ... (Everything is brahman to the brim ...)

khelati mama hRdaye rAmaH ... (Rama is sporting in my mind ...)

piba re rAma-rasam ... (Drink the nectar of rAma, hey ....)

brUhi mukundeti ... (Recite mukunda, speak of Him ...)

cintA nAsti kila ... (they have no worries, ...)

As listener and a student of music, compositions of Sadasiva Brahmendra have shaped how I perceive Bhakti and art. The solace we get in listening to his music is compounded when more people are able to enjoy the same. The principal reason for writing this article is to share the solace that I feel when I listen to his music and I hope I have piqued the interest of the readers to get in touch with the music of Sadassiva Brahmendra.

K. Hemalata, ITO

राजभाषा हेतु निर्धारित लक्ष्य

तिमाही में राजभाषा बैठकों का आयोजन – 1

पत्र शीर्ष, बैनर, नामपट्ट – 100%

166वां आयकर दिवस समारोह
166th Income Tax Day Celebration

हमारे विजेता
Our Champions

Mandeep Kaur, ITI, (Silver & Bronze Medalist in international Para Badminton in Japan & Indonesia)

Shikha Gautam, ITI, (Bronze medalist in International Badminton)

Abhishek Reddy, ITI, (Man of the Match in Ranji Trophy)

Devanshi, ITI, (3 Gold Medals in Para Swimming National Championship)

Ruthik Ragupathi, ITI, & Chirag Baretha, ITI, (Gold Medalist in Men's Doubles Para Badminton)

Saravanan M., ITI, (Gold Medalist in 16th world Bodybuilding)

Women's Basketball Team
(Won Tamil Nadu State Champion)

Men's basketball Team
(2nd Place in State Championship)

By: S. Pritika d/o M. Senthil ITI

MEMORIES OF A
TRAINER :
AN ANECDOTAL ACCOUNT

When I saw the notice calling for contributions to the departmental magazine 'Jharokha', I thought that I shall submit an article to this magazine at the fag end of my career. However, I was in a quandary, whether to write something serious or to compose something on a lighter vein. At the end, the lighter side in me was the winner. Therefore, I am typing out a few funny episodes my long journey in the training sector a trainer, keeping aside serious matters like Training Need Analysis or Training Methodologies.

The first episode happened in the early nineties. I was posted in the Regional Training Institute, Kolkata (now rechristened as NADT RC, Kolkata). Then, the senior most position in the regional training institute was called DD(Training) [Deputy Director Training -equivalent to today's Additional Director]. As it is the procedure uptil now, nomination for various courses conducted by the Institute would come from the Chief Commissioner's Office. That time, there was a lot of talk about need based training. One day, the then DD (Training) was speaking about the topic when I told him that sometimes, a few officials (Inspectors) often come with a request to get them nominated for some training course and I recommend their names to the Head Quarters for training courses. Instead of getting impressed, the super boss burst into a laughter - he explained to me that a good number of officials may be 'professional trainees- they may want to get nominated just to get relieved of the of official duties assigned to them ans spend some jolly good time in the training class! Then he took me to the theory of Training Need Analysis - but that is a different story.

The second episode relates to an office boss who, a person with deep sense of humour and enviable command over the English Language, was quite conservative in spending from office funds. As faculty members, we used to be given additional charges, like that of the library, or hostel, computer systems or the like . The faculty member in charge of library prepared a long list of books which, he thought, should be bought in the library . He put the file though with a little apprehension, whether,, all his suggestions will be approved.

However, to his shock, the boss asked him, " Why do you want to purchase new books ? Have all of you completed reading all the books that are there in the library ?"

In the NADT as well all the training institutes, for certain topics, guest faculties, either from the department or from the outside are invited to handle sessions on special topics as subject matter experts (SMEs). One guest faculty was using collar mike, in order to reach to the participants seated in the remotest corner of the training hall . However, there was a tea break and he was attending a private phone call. He forgot to switch off the collar mike and the result can just be imagined. However, thanks to an alert Group D staff, his embarrassment was minimised, to the extent possible.

Apart from Guest Faculties, very senior officers are often invited, either to inaugurate, or to deliver valedictory address at long duration or flagship courses conducted by the institutes.

This incident I happened in another sister Institute of ours. A very senior officer was invited to address the participants on the inaugural day. Generally, the course co-ordinator introduces the speaker to the participants. Considering his seniority the then second in command of the Institute, who was of the level of Additional Commissioner, came forward to introduce the speaker. The senior officer was almost a legendary figure in certain areas of work but at the same time, had impeccable sense of humour. The Additional Commissioner, while introducing him, used all the superlatives that he had, in his vocabulary. While starting the talk, the senior officer, referring to the Additional Director, smilingly said, Mr so and so, almost read out my obituary! There was some silent sign of laughter on all the faces in the training hall, except that of the introducer, who was too serious to appreciate the underlying humour .

The last two episodes relate my stint as a trainer in the Department of Taxes, Government of Botswana, during the period 2002-2005. Officer trainees were subject to long duration trainings in a cosy training divisions, which, that time was manned (and womanned) by all expatriates. One was late Noor Mahammad Ismail from Srilanka, Ms Annie Sibanda from Zimbabwe and myself, from India . A few periodical tests were built into the course design. The questions used to be subjective. After joining as a faculty, the result of the trainees in the first test I conducted, was a little less then a disaster. In such situations, the blame generally goes to the trainer, the assumption being that the trainer has not been able to explain the subject taught lucidly to the trainees. However, Ismail Sahib gave a different dimension to the problem.

After hearing that the trainees are a bit agitated, he called me to his cabin .

He asked, " Som, if I asked me, how many legs do a goat have, what would be your reply ?"

-" Four, "I had to reply.

- " That means, if somebody comes up with an answer other than four, is not it ?'

Not quite realising where he was driving at, I replied, "yes Sir !"

- However, in this country you have to learn to award part-marking. That means, if someone writes that a goat has two legs, you have to give him part marking, since 4 includes 2 . If someone answers 6, then also you have to give some marks, because, six includes 4!

During the remaining part of my tenure, I obeyed this principle and was never in trouble .

However, this is not to suggest that there was dearth of talent in that country among the locals. There were quite a brilliant trainees with a good number of them, a few of them lazy enough not to apply their potentials to work.

During my tenure in Botswana, a building with massive infrastructure was built for the new Tax Building in a place called Nelson Mandela Drive. Offices located here and there in the city of Gabrone were required to shift to the new building .Tax offices of the training division was located in a place called BBS Mall, with several other divisions. Everyday meetings used to be held and umpteen number of committees formed to materialise the process of shifting. Decision making was quite slow there because of the tribal culture of 'ghotla' meeting - where even the junior most member had the right to object to proposals mooted by the senior officers - consensus, though ever illuding, was the norm for making decisions.

We in training division had a small library, a few cabinets and furniture, apart from a few files. It was easy for us to

move out but we were stalled in the process. There was one Commonwealth Tax Advisor, Mr Kathirgammer, a Srilankan, and a good friend of my superior, Ismail Sir. One day, Mr Kathirgammmer asked my boss - you are not taking your furniture to the new building - then why are you not moving out ? He did not listen to what Ismail Sir told but literally dragged him and started his car. They came back with a number of packing boxes from the BBS Mall and engaged a few messengers and cleaners for putting in the files and books, then booking an official vehicle for carrying the goods.

The very next day we moved to the new building !

That was quite a management lesson to me, with the underlying proverb, where there is a will, there is way !

Indeed, and that is why, I am writing this piece in my last working day in office.

N.B.SOM
CIT
(Retired)

MY PILGRIM TRIP TO
PURI AND ODISHA

I have my aunty who keeps on reminding about a pilgrim trip to Puri Jagannath Temple. We had been planning for the trip since two years. And finally we made it.

We had scheduled our trip from the morning of 15th August, 2025 till the morning of18th August, 2025. We were five of us and had three full days to plan our trip accordingly. We reached Bhubaneswar by Flight around 9.00 AM on 15th August, 2025. As planned, we went to Puri by a prepaid car and the distance between Bhubaneswar to Puri is 69 kms . The travel cost by car after negotiation was Rs.1500/-.While conversing with the driver, we came to know that he was willing to facilitate our travel for all the three days in the same vehicle. The owner of the vehicle accepted for Rs.11,000/- for the whole trip. We were fortunate enough to get a good vehicle and driver throughout the trip. I was able to manage with my butler Hindi. However, there was a Odisha friend (my husband's office) who was the mediator for us and the driver as and when required.

Our first spot on the tour was Chandrabhaga beach. This place is some 3 kms away from Konark temple and a beach worth watching. The beach has a clean, pristine sand.

From there, we moved on to the Konark Sun Temple. We saw the architectural excellence with beautiful carvings and embellishment. The wheels or chakras all over the temple maintain its uniqueness and sharpness in structure. The word "Konark" is an amalgamation of two Sanskrit words "Kon" meaning corner and the word "Arka" refers to the dedication of the temple to "Sun God". We took pictures as much as we can and moved on heading towards Puri. We were trying for a vegetarian Hotel. However, we could find very few. We had dhal and curdrice.

We had booked for two days in Income Tax Puri Guest House. The same day evening, on request, our people in Guest House helped us in getting hold of a Panda for guiding us through the Puri Jagannath Temple. Unknowingly, we had planned for Darshan of Lord Puri Jagannath on an auspicious day i.e. Krishna Janmashtami (celebrated in

Puri on 15th August, 2025). There was huge crowd inside the temple. Somehow, our Panda managed to take us through the crowd and we had a wonderful and a blissful Darshan. We stayed there for Arthi and tasted the Prasad also. The Panda explained us thoroughly about the whole significance of the temple which was very interesting and a surprising mystery to hear. On the whole, It was a divine experience.

The next day morning, we went to a nearby beach called Blue Leaf or the Golden Beach. It was a private Beach which was very well and neatly maintained. They collected Rs.50/- per person for one hour. We took a jolly bath over there. The most interesting part in the beach is that, it has the facility to take a shower bath for ladies and gents separately after taking a dip in the sea.

After Lunch, we travelled for three hours in the car to reach Chilika Lake near Satpada Beach. We took a Jetty Boat and experienced the ride for an hour. The lake is the home ground for dolphins. After few minutes of the ride, the boatman took us to a specific place where we could see the dolphins playing around. We were able to witness around 6-7 dolphins. The day ended with good rest in the Guest House.

The next day i.e. 17th August, 2025, we bid good bye to Puri and headed towards Bhubaneswar. On the way we visited Dhauli Hill with its Shanthi Stupa and had a scenic view from the Hill. From there , we went to Lingaraj Temple, which is one of the oldest Hindu temples worshiped from all over India. It is built of deep red sandstone. We saw that the main gate had big lions carved on both sides. Probably that is why it is called the 'Lion's Gate'. We were given only 1 hour to see the four sections of the temple. Seldom have I seen such big walls of a temple carved with beautiful sculptures of Hindu Gods and Goddesses and different animals and birds.

Few steps away from the Lingaraja Temple is the Ananta Vasudev Temple where we had Prasad as lunch. On the way we touched Mukteshwar Temple. We took a break in a private Hotel in Bhubaneswar. In the evening around 4.30 PM, we visited the best tourist spots of Kandagiri and Udaigiri caves and took some beautiful clicks from the hill. That was it for the day.

On 18th August, 2025, we took the flight back to Chennai. Overall, we had a pleasant and comfortable trip which would ever remain green in our memory.

T.M. Hemalatha
Sr.PS

आई.टी.एस.आर.सी. सांस्कृतिक उत्सव का उद्घाटन
ITSRC Cultural Meet Inauguration

पोंगल उत्सव
Pongal Celebration

ANECDOTE :

EMPATHETIC SISTERHOOD

A time in 2008..

"Everyone please go through the meanings from yesterday's class. Sir will come in some time and will ask every one randomly." the class representative said.

The announcement caused quite a hullabaloo inside the class.

I was absent the previous day. So I thought I could use it as an excuse if sir asks me to tell what I have learnt. Everyone poked their heads into their English note books except me.

When sir came inside, there was a pin drop silence for few minutes. Sir gave a typical look at entire class and asked whether we had learnt meanings or not.

The silence followed his question.

Out of nowhere, Sir pointed out me and asked the same question. It came to me like a bolt from the blue. I told him that I was absent to the class the previous day.

Sir gave a silly grin and said, "Your twin sister is here in the class yesterday which means you should be aware of the meanings session."

That was it. My mind was searching for the other excuses but couldn't find any. After a long exhausting minute, I told him I didn't study.

With a scowl on his face, he brought a wooden stick from his cabin and asked me to show my palm. He hurled some angry words at me and when he intended to beat me with the stick, my twin sister got up from her place and said,

" Sir, my sister is not feeling well, she was absent yesterday because she suffered from fever and cold and she has been suffering. If you want to beat, I beg you to beat me instead."

My sister and I looked at each other with tears in both of our eyes which spoke volumes in that moment making sir's anger melt.

Even the clouds melt for her act of kindness. From the window I could see the rain giving us the company.

RAMA LAGUDU

ITI

கனவு மெய்பட வேண்டாம்

மெல்ல போர்வையை விலக்கி கைகளை வைத்து கைபேசியை எடுத்து மணியை பார்த்தேன், மணி நான்கு. "அதற்குள்ளே விடிந்து விட்டதா!" என்று ஆச்சரியத்துடன் எழுந்தபோது, அப்பாவின் அலறல் சத்தம் கேட்டது. நெஞ்சு வலியில் துடித்து கொண்டிருந்தார். அம்மா என்ன செய்வதென்றறியாது திகைத்தாள். பின் கைபேசியை எடுத்து கீழ் வீட்டு நண்பரை அழைக்க, அவர் அடுத்த இரண்டு நிமிடங்களில் வந்தார்.

மூவருமாக சேர்ந்து அப்பாவைத் தூக்கிச்சென்று காரின் பின் சீட்டில் படுக்க வைத்தோம். அம்மா காரை ஓட்ட, நான் முன் சீட்டில், பின் பார்த்தபடி அமர்ந்தேன். லேசான மழை, இருட்டு கண்களை மறைக்க, அம்மா காரின் வைப்பரை ஓட விட்டாள். இருந்தும் மறைத்தது, இம்முறை கண்ணீர். தன் துப்பட்டாவால் கண்களை துடைத்துக்கொண்டு வேகமாக மருத்துவமனை நோக்கிச் சென்றாள்.

அதிகாலை என்பதால் மருத்துவமனை கதவுகள் மூடி இருந்தன. கதவைத் தட்டினோம், திறக்கவில்லை, கண்காணிப்பாளர் தென்படவில்லை. பத்து நிமிடம் தட்டியபின் கதவு திறந்தது, சூரிய ஒளி கண்களை கூசச்செய்தது. மெல்ல கண்கவைத் திறக்க, அம்மா கைகளில் காபியுடன் அருகில் படுத்திருந்த அப்பாவை எழுப்பினாள். பெருமூச்சு விட்டு போர்வையை இழுத்துப் போர்த்திக்கொண்டு மீண்டும் தூங்கப்போனேன் நிம்மதியாக...

K. Suresh Babu, ITO

இயற்கை

ஆனந்தி அலுவலத்திற்குள் நுழைந்தவுடன் அனைவரும் கண்களால் ஒருவரை ஒருவர் பார்த்து சிரித்துக் கொண்டனர். அப்பப்பா என்ன வெயில், கண்ணெல்லாம் எரிகிறது என்று குடையை மடக்கி அருகில் வைத்து விட்டு உட்கார்ந்தாள். தினமும் இவளுடைய புலம்பலை கேட்பதால் அவளுக்கு அலட்டல் ஆனந்தி என்று ஒரு பட்டப் பெயர். ஒரு நாள் காலை வழக்கம்போல் சிடுசிடுத்த முகத்துடன் வீட்டைப்பூட்டி குடையை விரித்தான். காய்மா, காய் என்று ஒரு குரல் கேட்டது. வெய்யிலில் குழந்தையுடன் தலையில் காய்கறிக் கூடை பாரத்துடன் தன்னுடைய மகள் பேசுவதைக் கேட்து ரசித்துக் கொண்டு சிரித்த முகத்துடன் அம்மா காய் வேண்டுமா என்றாள். ஆனந்தி ஆச்சரியத்துடன் அவளை பார்த்தாள். எப்படி உன்னால் இவ்வளவு சந்தோ சமாக இருக்க முடிகிறது. வெய்யில் சுட்டெரிக்கிறது. தலையில் பாரம் கையில் பாரம் என்றாள். அதற்கு அந்த காய் விற்பவன் அம்மா, நாம் வெயில் காலத்தில் வெய்யிலைக் குறை சொல்கிறோம் மழைக் காலத்தில் மழையைக் குற்றம் சொல்கிறோம். ஆனால் இவை இரண்டும் இல்லையென்றால் எந்த உயிரினமும் பூமியில் இருக்காது. நாம் இயற்கையை அனுபவிக்க வேண்டும், மரியாதை அளிக்க வேண்டும் என்றாள். அந்த படிக்காத மேதையின் பேச்சு அவளுடைய எண்ணத்தை மாற்றியது. குடையை மடக்கி கைப்பைக்குள் வைத்துக் கொண்டாள். சிரித்த முகத்துடன் நுழைந்த ஆனந்தியை பார்த்து அனைவரும் ஆச்சரியப்! பட்டனர்.

B. Revathy, AO
(Retired)

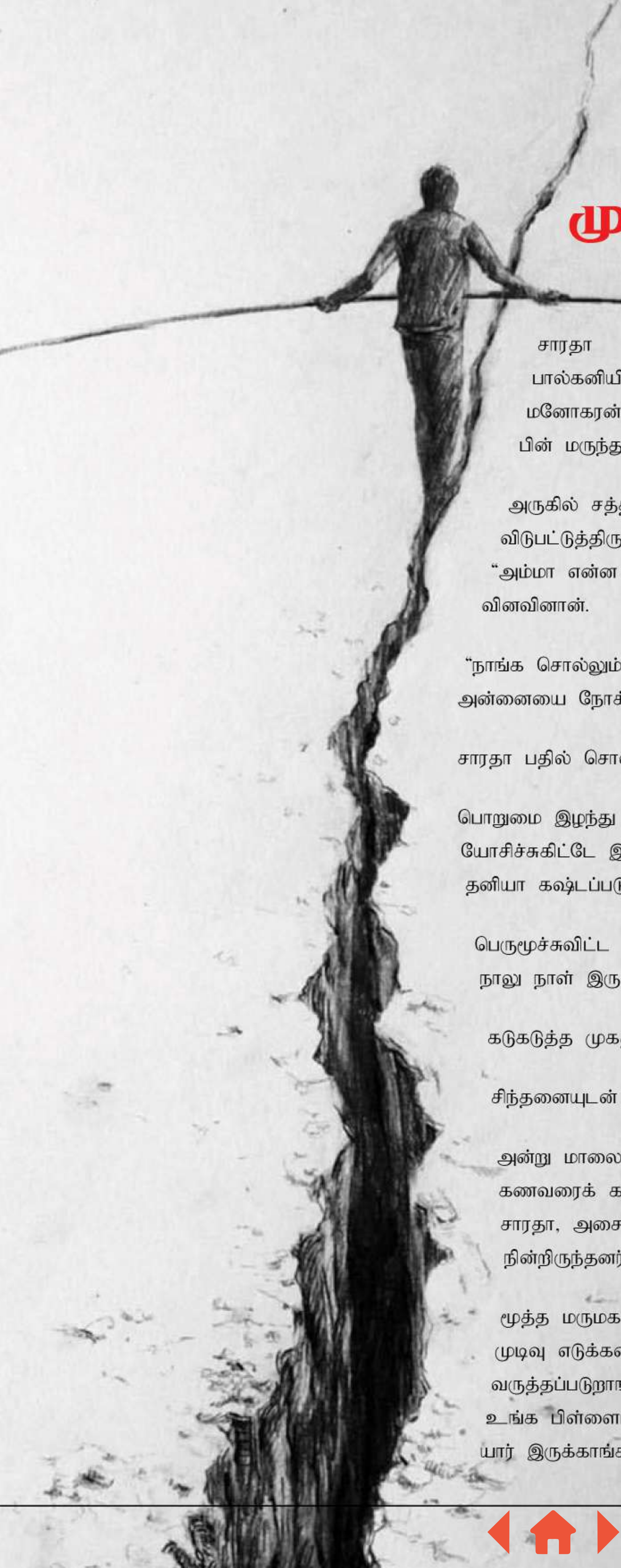

முடிவு அல்ல

சாரதா

பால்கனியில் காபியுடன் வந்து அமர்ந்தாள் கணவர் மனோகரன் இன்னும் எழவில்லை. பாரிச வாயு தாக்கிய பின் மருந்துகளின் உபயத்தால் மட்டுமே தூக்கம்.

அருகில் சத்தம் கேட்க, சிந்தனையிலிருந்து விடுபட்டுத்திரும்பினாள். மகன்கள் ரகுவும், சிவாவும், "அம்மா என்ன முடிவு செஞ்சீங்க?" மூத்தவன் ரகு வினவினான்.

"நாங்க சொல்லும் யோசனைதான் பெஸ்ட்ம்மா", சிவா அன்னையை நோக்கினான்.

சாரதா பதில் சொல்லவில்லை.

பொறுமை இழந்து ரகு, "ஏம்மா, எத்தனை நாள் இப்படி யோசிச்சுகிட்டே இருப்பிங்க? அப்பா உடம்பு மோசமாச்சுன்னா, தனியா கஷ்டப்படுவீங்க, தேவையா?" என்றான்.

பெருமூச்சுவிட்ட சாரதா, "நீங்க கிளம்புறதுக்குள்ள சொல்றேன், நாலு நாள் இருக்கே", என்றாள்.

கடுகடுத்த முகத்துடன் இருவரும் திரும்பச் சென்றனர்.

சிந்தனையுடன் காபி குடிக்க ஆரம்பித்தாள் சாரதா.

அன்று மாலையில், மகன்கள் வக்கீலைப்பார்க்க சென்றனர். கணவரைக் கவனித்து விட்டு கூடத்து ஊஞ்சலில் அமர்ந்த சாரதா, அசைவு கண்டு நிமிர்ந்தாள். இரு மருமகள்களும் நின்றிருந்தனர்.

மூத்த மருமகள், வசுதா கூறினாள், "இன்னும் நீங்க முடிவு எடுக்கலைன்னு, உங்க பிள்ளைங்க ரொம்பவும் வருத்தப்படுறாங்க. இவ்வளவு யோசிக்க என்ன இருக்கு? உங்க பிள்ளைங்கதானே? உங்களுக்கு எங்களை விட்டால் யார் இருக்காங்க?" என்றாள்.

இளையவள் பானு, "ஆமாம்
ஆமாம், உங்களுக்கும் வயசாச்சு,
தனியா எத்தனை காலம் இருப்பீங்க? நீங்களும்
படுத்துட்டா ரெண்டு பேருக்கும் கஷ்டம் இல்லையா?" என்றாள்.

சாரதா அமைதியுடன் இருவரையும் பார்த்தாள் "நான்தான் சனிக்கிழமைக்குள்ள சொல்றேன்னு சொல்லிட்டேனே அவங்ககிட்ட?" என்றாள்.

வசுதாவின் முகம் கடுத்தது, "மாட்டேன்னு சொல்லிட்டா, இனிமே எதுக்கும் எங்களை எதிர்பாக்காதீங்க. நீங்களே சமாளிச்சிக்கோங்க. எங்க கஷ்டத்தில் உங்களுக்கு பங்கு இல்லைன்னா, உங்க கஷ்டத்திலும் எங்களுக்குப் பங்கு வேண்டாம்", நிஷ்டூரமாகச் சொல்லிவிட்டுத் திரும்பிப் போய்விட்டாள்.

ஒரு நிமிடம் நின்ற பானுவும், அவளைத் தொடர்ந்தாள்.

பசுமை சூழ்ந்த தோட்டத்தின் நடுவில் அமைந்த நாற்காலியில் ஒன்றில் அமர்ந்திருந்த சாரதா, ஒரு நெடுமூச்சிடுடன், "எல்லாம் சொல்லிவிட்டேன் ராதா நீதான் எனக்கு வழி சொல்ல வேண்டும்" கண்கள் லேசாகக் கலங்கக் கூறினாள்.

ராதா சற்று அமைதியுடன் இருந்தால். பின் தோழியை நோக்கினாள்.

"சாரு, நீ எவ்வளவோ திடசாலி. இப்படி கலங்கலாமா? உன் பிள்ளைகள் தானே. கூடத்தான் இருந்து பாரேன்? கொஞ்ச காலம் இருந்து பார். சரிவரவில்லையென்றால், என்னிடம் வ, உனக்காக இந்த" பசுஞ்சோலை காப்பகம்", எப்போதும் திறந்திருக்கும். என் அறையிலேயே உனக்கும் ஒரு கட்டில் போடுகிறேன். நாம் பள்ளி நாட்களைப்போல் சேர்ந்தே இருப்போம். சேர்ந்தே இந்த காப்பகத்தை நடத்துவோம்" என்றாள்.

விரக்தியான ஒரு புன்னகையுடன் சாரதா தோழியை நோக்கினாள்,

"ராதா கொஞ்சகாலம் இருந்து பார்த்துவிட்டு முடிவெடுப்பது என்பது நடக்காது வீட்டை விற்றுப் பணத்தைத் தந்தால்தான், அவர்கள் வீடுகளில் இடம். பணத்தைக் கொடுத்துவிட்டால், ஒரு ரூபாய் திரும்பி வராது வீடு என் பெயரில் இருக்கிறது. அதனால் அவர்கள் இவ்வளவு பேசுகிறார்கள்", என்றாள்.

ராதா யோசனையுடன், "சரி சாரு, அவர்களுடன் இருந்து விடேன். பணம் கொடுத்தால் மரியாதையோடு தங்கலாமே? " எனக் கேட்டாள்.

விரக்தியுடன் சிரித்த சாரதா, "இப்போ உன்னை வந்து பார்க்கவே, வேலைக்காரியை, என் கணவருக்குத் துணையாக விட்டு வந்தேன். ஒரு ரெண்டு மணி நேரம் பார்க்காத மருமகள்களா, காலம் முழுவதும் பார்ப்பார்கள்? ஒரு தடவை கீழே விழுந்து கால் எலும்பு முறிந்தபோது, பெரியவன்வீட்டில் ரெண்டு மாதமும், சின்னவன் வீட்டில் ரெண்டு மாதமும் இருந்தோம். தினம் தினம் புலம்பல்தான். பெரிய மருமகள் சின்னவள் பார்த்தால் என்ன என்பாள். சின்னவள் பெரியவளைச் சொல்லுவாள். அவர்களைச் சொல்லி குற்றமில்லை. ஆபசுக்கும் போய், குழந்தைகளையும் பார்த்து, சமையலும் செய்து, எங்களையும் பார்க்கணும்னா

கஷ்டம்தானே? ஆனால்
என் கவலை, பணத்தையெல்லாம்
அவர்களிடம் கொடுத்து விட்டால், அவர்களால் திருப்பி
தர முடியுமா?" என்றாள்.

"அதெப்படி முடியும்? இரண்டு பெரும் பணத்தைச் சமமாக எடுத்துக்கொண்டு,
மேலே லோன் போட்டு வீடு வாங்குகிறார்கள்", ராதா கூறினாள்.

சற்று நேரம் அங்கு அமைதி நிலவியது. பின் மெலிந்த குரலில், சாரதா
வினவினாள்.

"ராதா, நாங்கள் இங்கு சேர்ந்தால், எங்கள் கடைசி காலம் வரை பார்த்து,
கடையேற்றுவியா?" என்றாள்.

"என்ன சாரு இப்படி கேட்கிறாய்? நாற்பது வருடமாய் நடத்துகிறோம். என் பொண்ணும்
மாப்பிள்ளையும் இப்போ இதில் பொறுப்பு எடுத்துகிட்டாங்க. நானும் இங்கேயே
இருந்து பார்த்துகிறேன். எத்தனையோ பெரியவர்களைக் கடைசிவரை பார்த்து,
இறுதிக்காரியங்களையும் நாங்களே செய்கிறோம். நீ கவலைப்படாதே சாரு", அன்புடன்
கூறினாள்.

ஒரு முடிவுக்கு வந்த சாரதா, "அது போதும் ராதா. எனக்கு இப்போ தெம்பு வந்துடுத்து. நான்
போனாலும், வீடு வித்த பணம் என் கணவருக்குப் பாதுகாப்பாக இருக்கும். அதைப் பிள்ளைகளிடம்
கொடுத்து விட்டால்தான் நாங்கள் முழு அனாதைகளாவோம். இந்த காலத்தில் பணம் தான் நம்பகமான
வாரிசு", என்றாள் வேதனையுடன்.

"அப்படிச் சொல்ல முடியாது சாரு. எல்லா பிள்ளைகளும் ஒன்று போல் இருக்க மாட்டார்கள்" என்றாள்
ராதா."

"ஆமாம், ஆனால் பணப்பாதுகாப்பு ஒன்றுதான்", என்றாள் சாரதா.

"உன் பிள்ளைகள் ரொம்பக்கோவப்படுவார்கள் சாரு ", என்றாள் ராதா.

"ஆமாம் பணம் தரவில்லையானால், பிள்ளைகளே இல்லையென்று நினைச்சுக்கச் சொன்னார்கள். இன்று
வரை, பணத்தாலோ, தேகத்தாலோ, எதுவும் செய்யாதவர்கள், எங்கள் காலத்துக்குப்பின் காரியங்கள்
செய்வார்கள் என்று என்ன நிச்சயம்? இனி இந்த காப்பகம்தான் எங்கள் வீடு. எங்கள் வீடு விற்றப்
பணம்தான் கைகோடுக்கப்கொகும் பிள்ளை" உறுதியுடன் கூறிய சாரதா, ராதாவின் கைகளைப் பற்றி லேசாக
அழுத்திவிட்டு, புன்னகைத்து விட்டு விடை பெற்றாள்.

R.Bhuvaneswari, ITO

பெண்ணின் பெருமையே மண்ணின் பெருமை

பெண்ணின் பெருமையை உயர்த்தும் நாடே இந்த மண்ணுலகில் உயர்ந்துள்ளது. தகவல் தொழில் நுட்பம் வளர்ச்சியடைந்துள்ள இன்றைய காலகட்டத்தில் பெண்கள் பல்வேறு துறைகளில் ஆணுக்குச் சமமாகவும், ஆண்களை விட அதிகமாகவும் முன்னேறி வருகின்றனர். சர்வதேச மகளிர் தினம் கொண்டாடப் படும் இந்த நேரத்தில் பெண்களின் பெருமையையும், அவர்களின் முன்னேற்றத்திற்கு பலரும் ஆற்றிய பங்கினையும் அறிந்து கொள்வோம்.

பெண்களின் பெருமையை பல நூற்றாண்டுகளுக்கு முன்பிருந்தே அறிந்துக் கொள்ளலாம். புராணக் காலத்துக் காரைக்காலம்மையார் போன்றவர்களையும் நளாயினி, சாவித்திரி, சந்திரமதி, தாரா, மண்டோதரி, சீதா போன்ற பெண்ணரசிகளை இன்றும் கற்றோரும் மற்றோரும் போற்றுகின்றனர்.

காப்பிய நாயகிகள்

சங்க காலம் தழுவிய காப்பியங்களான சிலப்பதிகாரம், மணிமேகலை, சீவக சிந்தாமணி, குண்டல கேசி, வளையாபதி ஆகியவற்றில் உள்ள பெண் பாத்திரங்களின் வரலாறு பெண்ணியத்திற்கு பெருமைத் தேடி தந்துள்ளன. சிலம்பில் கண்ணகி, மாதவி, கவுந்தியடிகள், தேவந்தி, போன்றவர்களின் வரலாறு பல பண்புகளை உயர்த்தி நிற்கின்றன. கண்ணகி தெய்வாகியது, பெண்மைக்கே உய்வு தருவது, மாதவி, மணிமேகலையின் துறவு மேன்மை போன்றவற்றை மறக்க முடியாது.

பெண்பாற் புலவர்கள்

சங்க காலத்திலேயே பெண்கள் கல்வியில் சிறந்தவர்களாக இருந்துள்ளனர். தலைமைப் பண்பு மிக்கவர்களாகச் சரித்திர சாதனை புரிந்துள்ளனர். ஔவையார், காவற்பெண்டு, பாரி மகளிர், குறமகள் இளவெயினி, வெண்ணிக் குயத்தியார், நன்முல்லையார், வெண்பூதியார், காக்கைப் பாடினியார், நச்செள்ளையார் போன்றவர்களும் இன்னும் பலரும் காட்டப்படுகிறார்கள். மன்னர்களுடன் இப்புலவர்களின், அதியமான் ஔவைக்கு நெல்லிக் கனி கொடுத்தது, தூது போன காட்சிகளும் உண்டு. ஆதி சங்கரருடன் வாதம் செய்த பெண் பற்றியும் வரலாறு உண்டு.

இலக்கியத்தில் பெண்ணின் பெருமை

பக்தியை பேசும் இலக்கியத்தில் பெரிய புராணம் முதன்மையானது, 28 பெண்களைப் பற்றி குறிப்பிடுகின்றது. இருபத்தியொருவர் நாயன்மாரது மனைவியர், தாயார் நால்வர், மகள்மார் இருவர், உடன் பிறப்பு இருவர், காரைக்காலம்மை, இசைஞானியார், மங்கையர்க்கரசியார் ஆகிய மூவரும் நாயன்மார்களுக்கு இணையான பேறு பெற்றனர். சிவனுக்காக பிள்ளைக் கறி சமைத்த, சிறுத் தொண்டர் மனைவியை ""மனையரத்தின் வேராகி" என்று சேக்கிழார் புகழ்ந்துள்ளார். புராணக் கதைகள் கற்பனை என்று சாதித்து வாதிப்பவரும் உண்டு.

வீர மங்கைகள்

சங்க காலத்தில் வீரத்தின் விளை நிலமாகவும் பெண்கள் விளங்கினர். போர்க்களத்தில் தீரமுடன் போராடிய வீர மங்கையர்களையும் படித்திருக்கிறோம். ஆங்கிலேய ஆட்சியில் ஜான்சிராணியை மறக்க முடியுமா? இவையே ஆணின் வெற்றிக்குப் பின் பெண் இருக்கிறாள் என்பதை நிரூபித்துள்ளது.

பாரதியும் பெண்ணியமும்

பெண்ணின் பெருமையை உலகத்திற்கு பறைச்-சாற்றியதில் பாரதிக்குப் பெரும் பங்குண்டு. பாண்டிச்சேரியில் தனித்திருந்த பாரதியார், தேநீர் தயாரித்து அருந்தத் தடுமாறிய நிலையில் செல்லம்மாளை உணர்ந்தார். பெண்ணின் விடுதலைக்காகப் பாடினார். வேதநாயகம் பிள்ளை சுகுண சுந்தரியில் குழந்தை மணத்தைக் கண்டித்தார். பெண் கல்வி வளர்ந்தது. சமுதாயம் உயர்ந்தது. தொழில் பகுதி உயர்ந்தது, மகளிரும் தொழில் வாய்ப்பைப் பெற்றனர். மாதவையா, கல்கி போன்றவர்களை தொடர்ந்து பின் வந்தவர்களும் பெண்ணின் பெருமையைப் பேசினர். மகளிருக்கென சிறந்த ஊடகங்கள் பறைசாற்றின.

எழுத்தாளர்கள், இசையரசிகள், சொற்பொழிவாளர், அரசியல் தலைவர்கள், ஆராய்ச்சியாளர்கள் எனப் பல்வேறு துறைகளிலும் கொடிகட்டிப் பறப்பது நாட்டிற்கும் வீட்டிற்கும் பெருமையே. பெண்களால் எதையும் சாதிக்க முடியும் என்று நினைத்து, அன்றாடம் கிடைத்த ஊடகங்கள் அனைத்தின் மூலமும் போதித்து பெண்ணுரிமையை பேணிக்காக அயராது முயல வேண்டும். நாட்டை ஆட்சி செய்ய மன்னன் இருந்தாலும் ஒரு வீட்டை ஆட்சி செய்ய ஒரு பெண்தான் வேண்டும், என்பது எவராலும் மறக்க முடியாத உண்மை.

M. VEDAVALLI, AO

உயிரின் வலி

"சிரமறுத்தல் வேந்தனுக்கு பொழுதுபோக்கும்

சிறிய கதை நமக்கெல்லாம் உயிரின் வாதை"

என்று மனிதனால் பிற மனிதனுக்கு நேரிடும் துன்பத்தை உயிரின் வலியை மிகவும் உணர்வு பூர்வமாக வெளிப்படுத்தினார் பாவேந்தர் பாரதிதாசன்.

கருணாமூர்த்தியாகிய வள்ளல் பெருமான் "துண்ணெனக் கொடியோர் பிற உயிர் கொல்லத் தொடங்கிய போதெல்லாம் பயந்தேன் கண்ணினால் ஐயோ பிற உயிர் பதைக்கக் கண்ட காலத்திலும் பதைத்தேன்" என்று தாயுள்ளத்தோடு மனிதனால் பிற உயிர்களுக்கு ஏற்பட்ட துன்பத்தைக் கண்டு நடுங்கினேன் என்று பதைபதைக்கிறார்.

வள்ளுவப் பெருந்தகை "அறிவினால் ஆகுவதுண்டோ பிறிதின் நோய் தன்நோய்போல் போற்றாக்கடை" என்றும் "அன்பின் வழியது உயிர்நிலை அஃதிலார்க்கு என்புதோல் போர்த்த உடம்பு" என்றும் கருணையின் மேன்மையை எடுத்துரைக்கிறார்.

மற்றொரு புறம் ஔவைப்பிராட்டியார் "அரியது கேட்கின் வரிவடி வேலோய், அரிது அரிது மானிடராய் பிறத்தல் அரிது" என்று கிடைத்தற்கரிய மானிடப் பிறப்பின் மேன்மையை உணர்த்துகிறார்.

வள்ளல் பெருமான் ஆடம்பரமான இறை வழிபாட்டிலல்லாது ஜீவகாருண்யம் எனும் உயிரிரக்கத்தாலன்றி இறைவனின் கருணையைப் பெற இயலாது என்று அறுதியிட்டுக் கூறுகிறார்.

"ஆத்ம சுத்திலேனி ஆசாரமதியேல
பாண்டசுத்தி லேனி பாகமேல
சித்த சுத்தி லேனி சிவபூஜலேலரா
விஸ்வதாபிராம வினுரவேம"

என்று தெலுங்கு கவிஞர் வேமனா மஹரிஷி அறிவுறுத்துகிறார்.

மேற்கூறிய பாடலின் கருத்தாவது :-

உள்ளத்தூய்மை இல்லாமல் செய்யும் எந்தப் பூஜையையும் இறைவன் ஏற்பதில்லை என்பதாம்.

வள்ளல் பெருமான் மனித இனத்தை இரண்டாகப் பிரிக்கிறார். அன்பையும் கருணையையும் வாழ்வியல் நெறியாகக் கடைபிடிக்கும் மனிதர்களை 'அகவினத்தார்' என்றும் அல்லாதவரைப் புறவினத்தாரென்றும் வரையறுக்கிறார். வள்ளல் பிரான் இறையனாரிடம் "ஆருயிர்கட்கெல்லாம் நான் அன்பு செயல் வேண்டும் என்று முறையிடுகிறார்.

கடுவெளிசித்தர் பின்வரும் தம்முடைய பாடலில் மனிதன் தன் பிறவியின் நோக்கத்தை அறியாமல் வீணில் உழன்று துன்பமடைகின்றான் என்று குறிப்பால் உணர்த்துகிறார்.

"நந்தவனத்தில் ஓர் ஆண்டி - அவன்
நாலாறு மாதமாய்க் குயவனை வேண்டி
கொண்டு வந்தான் ஒரு தோண்டி - மெத்தக்
கூத்தாடிக் கூத்தாடிப் போட்டுடைத்தாண்டி".

இறையுணர்வில் திளைத்த சித்தர்கள் புறவழிப்பாட்டில் தம் கவனத்தை செலுத்தாது அகத்தில் சிவனையிறுத்தும் வகையினை உணரும் விதமான தவநெறியை மேற்கொண்டனர் என்பதை திருமூலரின் பின்வரும் பாடல் தெளிவாக எடுத்துரைக்கிறது :-

"அன்பும் சிவமும் இரண்டென்பர் அறிவிலார்
அன்பே சிவமாவது ஆரும் அறிகிலார்
அன்பே சிவமாவது ஆரும் அறிந்தபின்
அன்பே சிவமாய் அமர்ந்திருந்தாரே".

உயிர்களின் பரிணாம வளர்ச்சி என்ற தத்துவத்தை மேலைநாட்டு அறிவியலறிஞர் சார்லஸ் டார்வின் எடுத்துரைத்தார். அதையே நமது இறைவழிப்பாட்டு முறையில் தசாவதாரமாக பூடகமாகக் குறிப்பிடப்பட்டுள்ளதை உணர வேண்டும்.

பிற உயிர்களுக்கில்லாத சிறப்பை மனிதன் பெற்றவிதத்தினால் பரிணாம வளர்ச்சியில் மனிதன் தன் நிலையைக் கடந்து அதற்கடுத்த நிலையான இறைநிலையை அடையும் விதத்தை இறைத்தூதர்கள் காலந்தோறும் நமக்கு உணர்த்திச் சென்றனர். ஆயினும் சிற்றின்பமெனும் துன்பத்திலுழன்று உயிருடன் வாழும்போதே இறைநிலையை அடையும் பெரும் பேற்றினை மனித இனம் தவறவிடுவது மிகவும் வேதனையளிப்பதாக உள்ளது.

எப்போதோ நான் பார்க்க நேரிட்ட குறும்படத்தின் விவரத்தை நான் இங்கு குறிப்பிட விரும்புகிறேன்.

ஒருவர் கோயிலில் பூசாரியாக பணிபுரிகிறார். அந்தக் கோவிலில் உயிர்ப்பலி கொடுக்கும் வழக்கத்தைப் பூசாரியாக அவர் செய்வது வழக்கம். இந்த சூழலில் ஒரு நாள் சாலையில் மோட்டார் வாகனத்தில் பயணிக்கின்ற ஒருவர் விபத்தில் காயமடைந்து மூர்ச்சையில்லாமல் கிடக்கிறார். அருகில் குழந்தைகளுக்கான சில பாடப் புத்தகங்கள் சிதறிக் கிடக்கின்றன. அவ்வழியே வந்த பூசாரி பதைபதைத்து அருகில் சென்று பார்க்கிறார். கைபேசி ஒலிப்பதைக் கண்டு அதை எடுத்துப் பேசமுயல்கிறார். மறுபுறம் ஒரு பெண்குழந்தை "எங்கப்பா இருக்கே" என்று வினவுகிறாள். அந்தக் கணத்தில் பூசாரியுடைய உடல் சிலிர்க்கிறது. தந்தையில்லாமல் போனால் அந்தக் குழந்தையின் நிலை என்னவாகியிருக்கும் என்ற எண்ணம் அவர் மனதில் மேலிடுகிறது. அந்தக் கணத்தில் உயிர்ப்பலியினால் உண்டாகும் தவிர்க்கக் கூடிய எக்காலத்திலும் தவிர்க்கப்பட வேண்டிய துன்பச் செயல்களை தவிர்க்க வேண்டும் என்ற எண்ணம் அவர் உள்ளத்தில் தோன்றுகிறது.

ஓஷோ சமகாலத்தவர்களையும் தாண்டி சிந்தித்த தத்துவ அறிஞர். அவரது கருத்துகள் சமூகத்தால் காலங்காலமாக ஏற்றுக்கொள்ளப்பட்ட நியதிகளிலிருந்து முற்றிலும் வேறுபட்ட நிலையில், அன்னாரைப் புறக்கணித்த பெருமை நமக்குண்டு. ஓஷோ தனது "நீரும் இல்லை நிலவும் இல்லை" என்ற நூலில் ஞானம் எவ்வாறு தோன்றுகிறது என்பதை மிகவும் அழகாக விளக்குகிறார்.

நிலவு வெளிச்சம். ஒரு பெண் மூங்கிலால் செய்யப்பட்டு கயிற்றால் கட்டப்பட்ட வாளியில் நீரைக் கொண்டு வருகிறாள். நிலவின் தோற்றத்தை வாளியிலுள்ள நீரில் பார்த்து ரசித்த வண்ணம் அவள் நடந்து வரும்போது வாளியைச் சுற்றியிருந்த கயிறு அறுந்து விடுகிறது. வாளியிலுள்ள நீர் வழிந்து விடுகிறது. அந்தக் கணத்தில் நீரில் தெரிந்த நிலவு மறைந்துவிடுகிறது. அந்தக் கணத்தில் அவளுக்கு ஞானம் தோன்றுகிறது. இதனையே தத்துவ அறிஞர் ஓஷோ ஞானம் (Enlightenment) என்பது படிப்படியாக வருவதில்லை அது மின்னலைப் போன்று தோன்றுகிறது என்று குறிப்பிடுகிறார்.

காட்டில் ஆடையில்லாமல் திரிந்த காலத்தில் அறியாமையினால் தம் பசியைப் போக்க பிற உயிர்களைக் கொன்று வந்த மனிதன் காலப்போக்கில் தன் பசியைப் போக்க வேறு வழிகளும் உண்டென்பதை அறிந்து விவசாயம் செய்து சைவ உணவு முறையை கடைப்பிடிக்கலானான்.

இத்தகைய பக்குவ நிலையை அடைந்த மனிதன் மீண்டும் கற்கால மனிதனின் மனநிலையில் பிற உயிர்களைத் துன்புறுத்துவதை தனது வாடிக்கையாக மேற்கொண்டான். என்னே ஒரு அறிவீனமான செயல்.

தம் குழந்தைகளைப் பேணிப் பாதுகாக்கும் தாய்மையைப் போற்றும் விதமாக நாம் தாயை இறைவனுக்கும் மேலாக போற்றுகிறோம். அத்தகைய மேன்மையுடைய தாயானவள் மனிதனுக்கு பிற உயிரைப் போக்கும் மேன்மையற்ற செயல்களில் துணைநிற்கிறாள் என்பது மிகவும் வருந்தத்தக்கதாக உள்ளது. ஒரு தாய் நூறு ஆசிரியர்களுக்கு சமம் என்பார்கள். அத்தகைய மேன்மையுடைய தாயானவள் தம் பிள்ளைகளுக்கு போதிக்கும் அறமா இது?

நமது வாழ்வியல் நெறியானது பிற வாழ்வியல் நெறியிலிருந்து முற்றிலும் வேறுபட்டது தவிர மிகவும் மேன்மையானது என்பதை இறையனாரைத் தாயுமானவர் என்று போற்றும் விதத்தால் நாம் அறிய வேண்டும். தாய், தந்தை, குரு, தெய்வம் என்ற வழக்கின் படி தெய்வம் தாய் தந்தையர்க்குப் பிறகே என்பதை உணரலாம். ஆதலின் பெற்றோர்கள் குறிப்பாக முழுமுதல் ஆசாரியனாக ஓர் அன்னையின் தலையாய கடமை தம் குழந்தைகளுக்கு திருமூலர் முதல் திருஅருட்பிரகாச வள்ளலார் வரை நமக்கு உபதேசித்த அன்பெனும் கருணையை அன்பெனும் அறத்தைப் போதிப்பதாம்.

அன்பே சிவம்.

எல்லா உயிர்களும் இன்புற்று வாழ்க.

V. Senthil Nathan, ITI
(Retired)

சிற்றுண்டி

அன்று காலை மாதவன் சந்தோசமாக அலுவலகம் புறப்பட்டு கொண்டு இருந்தார். அவர் மனைவி தங்கம், என்னங்க காலை டிபனுக்கு மல்லிகைப்பூ இட்லியும், அரைத்து விட்ட குட்டி வெங்காய சாம்பாரும் செய்திருக்கிறேன், வந்து சாப்பிடுங்கள் என்றாள். மாதவன் அதற்கு எனக்கு இன்று என்னுடைய உயர் அதிகாரி உடன் காலை உணவு, அவர் தன்னுடைய காரிலேயே என்னை நட்சத்திர விடுதிக்கு அழைத்துச்செல்வார். எனக்கு தினமும் உன்னுடைய இட்லி சாப்பிட்டு அலுத்து விட்டது என்று சொல்லி கொண்டு, சீட்டியடுத்துக்கொண்டு கிளம்பினார். அலுவகத்தில் அவருடைய உயர் அதிகாரி தயாராக நின்று கொண்டு இருந்தார் . சந்தோசமாக சிரித்துக்கொண்டே வண்டியில் மாதவன் ஏறினார். ஓட்டுநர் ஒரு சிறிய தெருவுக்குள் வண்டியை செலுத்தினார். மாதவனுக்கு ஒன்றும் புரியவில்லை . அங்கே ஒரு முதியவர் சிற்றுண்டி விற்றுக்கொண்டிருந்தார். உயர் அதிகாரி மாதவனைப்பார்த்து இந்தப் பெரியவர் கல்லுரலில் மாவு அரைத்து, தானே மசாலா

சாமான் கையால் அரைத்துக் கிராமிய மணம் கமழ மல்லிகைப்பூ இட்லியும், அரைத்து விட்ட குட்டி வெங்காய சாம்பாரும் செய்கிறார். நான் தினமும் இங்கு தான் வந்து காலை உணவு சாப்பிடுவேன். நீ இன்று சாப்பிட்டுப் பார். தினமும் வருவாய் என்றார். மாதவனுக்கு மனம் பிசைந்தது. அலுவலகத்திற்குச் சென்றவுடன் மனைவிக்கு போன் செய்தார். அவள் என்னங்க, காலை டிபன் சாப்பிட்டீர்களா? எந்த உணவு விடுதிக்குச் சென்றீர்கள் என்றாள். இரவு என்ன செய்து வைக்கட்டும் என்று கேட்டாள். மாதவன் காலை செய்த சாம்பாரும், இட்லியும் சுடச்செய்து வை என்று சொன்னார். மனைவி அதைக் கேட்டுத் திகைத்தாள்.

B.Revathy, AO
(Retired)

राजभाषा अधिनियम एवं नियम – एक विहंगावलोकन

1) राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले सभी दस्तावेज द्विभाषी रूप में तैयार किए जाएं तथा इसके लिए अलग से गार्ड फाइल बनाई जाए।

2) हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दिए जाएं।

3) राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में नियमित रुप से, प्रत्येक स्तर पर आयोजित करते हुए बैठक में लिए गए निर्णयों पर उचित कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

4) राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 के अनुपालन में, 'ग' क्षेत्र में मूल हिंदी पत्राचार के लिए 60% तथा टिप्पणी के लिए 35% निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जाए।

5) कार्यालय में सभी मैनुअल, रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक, नाम पट्ट, साइन बोर्ड, पत्र शीर्ष, लिफाफों पर छपाई इत्यादि, हिंदी और अंग्रेजी (डिग्लॉट फार्मेट) में छपवाई जाएं।

6) सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित और प्रशिक्षित किया जाए।

7) राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी पुस्तकों की खरीद के लिए 50 प्रतिशतः लक्ष्य निर्धारित किया गया है। सभी कार्यालय हिंदी पुस्तकें लक्ष्य के अनुसार खरीदें।

8) कार्यालय प्रमुख का संवैधानिक दायित्व है कि वे अपने कार्यालय में राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करें।

9) कार्यालयी अनुवाद के लिए राजभाषा विभाग द्वारा बनाये गए अनुवाद सहायक टूल्स कंठस्थ एवं बहुभाषी ऐप सारथी का ही प्रयोग किया जाए।

10) सभी प्रकार के विभागीय विज्ञापन प्रत्येक कार्यालयों द्वारा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषा के साथ साथ हिंदी में अनिवार्य रूप से प्रकाशित किए जाए।

11) हिंदी शिक्षण योजना के तहत केंद्रीय सरकार के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी भाषा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाए।

12) कार्यालयों में प्रयोग किये जाने वाली रबड़ की मोहरें, पहचान पत्र विजिटिंग कार्ड, बैकड्रॉप, बैनर, स्टैंडीज एवं निमंत्रण पत्र द्विभाषी में बनाये जाए।

By: Sujata Doss, ITO